Neo Star

अयांश

हिंदी पाठमाला
(Text-cum-Workbook)

2

लेखिकाएँ

डॉ॰ गीता रानी
एम॰ ए॰ (हिंदी) गोल्ड मेडलिस्ट
पी-एच॰ डी॰

शोभा जैन
(एम.एड.)

Vardhman Books International Pvt. Ltd.
info@vardhmanbooks.com www.vardhmanbooks.com

Vardhman Books International Pvt. Ltd.

Branch Office : Plot No. 16, Sector 10-C, IInd floor,
Vasundhara, Delhi/NCR—201012
info@vardhmanbooks.com
www.vardhmanbooks.com
Toll Free No. 1800-121-9968

© प्रकाशक :

सभी अधिकार प्रकाशकाधीन हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक में समाहित संपूर्ण पाठ्य-सामग्री के किसी भी भाग का मुद्रण, इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य किसी विधि से संग्रहण, प्रसारण अथवा प्रकाशन पूर्णतया वर्जित है।

यद्यपि इस पुस्तक को लेखन/संपादन/प्रूफ रीडिंग, तथा चित्रांकन की दृष्टि से त्रुटिरहित रखने तथा पाठ्य-सामग्री को शुद्ध रखने का यथासंभव प्रयास किया गया है तथापि भूलवश कोई त्रुटि, मशीनी या यांत्रिकी, रह गई हो तो इसके लिए प्रकाशक, लेखक और मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं। पुस्तक के सुधार हेतु प्राप्त सुझावों के लिए प्रकाशक/लेखक आभारी रहेंगे। त्रुटियों का परिमार्जन एवं प्राप्त विचारों और सुझावों का समायोजन आगामी संस्करण में कर दिया जाएगा।

संपादक मंडल : वर्धमान बुक्स संपादक मंडल
टाइप सेटिंग एवं चित्रांकन वर्धमान बुक्स
मुद्रक वर्धमान प्रिंट लाइन

रजिस्टर्ड ऑफिस : प्लॉट नं. 2, मोहकमपुर इंडस्ट्रियल एरिया,
फेज़-II, दिल्ली रोड, मेरठ (एन.सी.आर.)-250002

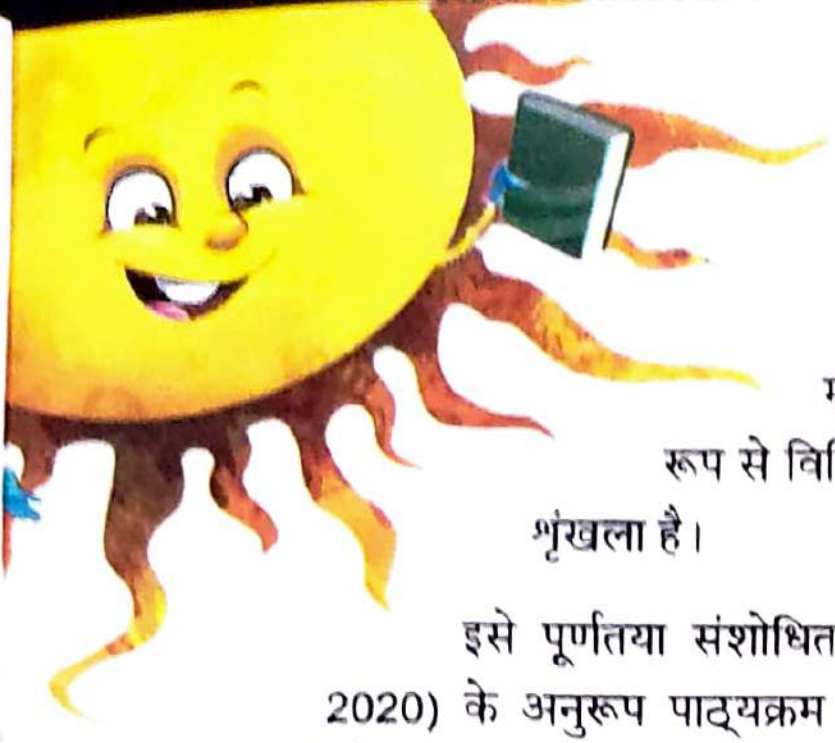

आमुख

प्रस्तुत हिंदी पाठमाला **अयांश** बालकों के मानसिक विकास की प्रक्रिया को रचनात्मक रूप से विविध स्तरों पर अग्रसर करने में एक महत्वपूर्ण शृंखला है।

इसे पूर्णतया संशोधित 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' (NEP 2020) के अनुरूप पाठ्यक्रम पर आधारित किया गया है। पाठमाला में विविध विधाओं जैसे– कविता, एकांकी, कहानी संस्करण, पत्र, जीवनी, डायरी, चित्रकथा, लोककथा आदि का समावेश किया गया है। साथ ही 21st Century Skills के सभी निर्देशीत बिन्दु समाहित हैं।

आलोचनात्मक चिंतन | रचनात्मक चिंतन | चर्चा आधारित | सहयोगात्मक

ज्ञानवर्धन के साथ-साथ रोचकता और चित्रात्मकता इन पुस्तकों को अभिप्रायः पूर्ण बनाते हैं। भाषा की बारीकियों को सहज रूप से समझाने के उद्देश्य से व्याकरण को सहज रूप में समाहित किया गया है।

भाषा के सभी कौशलों जैसे– 'पढ़ना, लिखना, बोलना और सुनना, आदि का विकास हो सके, इस उद्देश्य को इस पाठमाला की रचना के दौरान विशेष लक्ष्य में रखा गया है।

पुस्तक बालकों में चिंतन-मनन की क्षमता को निश्चित ही विकसित करेगी। साथ ही उनकी अनुभूति क्षमता भी गहन हो सकेगी।

स्वयं ही संवेदना की आंदोलित भावभूमि हमारे दावों का समर्थन करेगी। आदरणीय अध्यापक बंधुओं और विद्वत्जनों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

—लेखिकाएँ व प्रकाशक

विषय-सूची

1. कभी न हो अभिमान मुझे (कविता) 5
   - दीवाली मेला (चित्र वर्णन) 10
2. इज्ज़त की ज़िंदगी (एकांकी) 12
3. नई ड्रैस (दैनिक प्रसंग) 20
4. विज्ञापन : नई सोच (आस-पास) 26
   - तेरा देश मेरा गाँव (चित्रकथा) 32

   प्यारे पेड़ (कविता) पठन हेतु 34
5. मुर्गे की चतुराई (संवाद) 35
   - सूरज और मुर्गा 41

   जैसे बताशा (कविता) पठन हेतु 42
6. कृष्ण और सुदामा (कहानी) 43
   - आर्ट गैलरी (चित्रकथा) 49
7. नील गगन में पंछी (कहानी) 52
8. गीत गाया सब्जियों ने (गीत नाटिका) 59

   कुएँ में चाँद (मनोरंजक कहानी) पठन हेतु 66
9. स्वस्थ जीवन 68
   - मौसम-मौसम (चित्र वर्णन) 74
10. कौन सिखाता? (कविता) 75

    जी होता चिड़िया बन जाऊँ (कविता) पठन हेतु 80
11. मैं तारा हूँ ... (आत्मकथा) 81
    - तारे (कविता) 87
12. मेरा देश ... (स्थान परिचय) 88
13. कछुआ और खरगोश (कहानी) पठन हेतु 93
14. क्रिसमस 96

    प्रश्न पत्र-I 101

    प्रश्न पत्र-II 103

1 कभी न हो अभिमान मुझे

बताओ आपके परिवार में पूजा कैसे की जाती है?

अध्यापन संकेत

- बच्चों से पूछें कि वे प्रतिदिन किसकी वंदना करते हैं और भगवान से क्या पाना चाहते है।

- सबके मन में कुछ न कुछ बनने या पाने की इच्छा होती है। आओ जानें कि ये बच्चे अपने लिए ईश्वर से क्या प्रार्थना कर रहे हैं–

(कविता)

मैं सच्चा इंसान बन सकूँ,
छल-कपट रहे कोसों दूर।
मेरी वाणी हो वंशी सी
अपनेपन से हो भरपूर।

मित्र बनूँ मैं दीन-दुखी का
सदा शौक बना रहे-सेवा का।
मुझसे सब प्राणी सुख पाएँ
मन से सबकी मिले दुआएँ।

सबका मैं सम्मान करूँ,
माता-पिता का नाम करूँ।
कभी न हो अभिमान मुझे
दो प्रभु ये वरदान मुझे।

—डॉ० गीता रानी

शब्द-अर्थ

इंसान - मनुष्य; छल-कपट - झूठ-फरेब; वाणी - बोली, भाषा; भरपूर - भरी हुई; शौक - रुचि; दुआएँ - आशीर्वाद; सम्मान - इज़्ज़त; अभिमान - घमंड।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) बच्चे दूर रहना चाहते हैं–

(i) शहर से ( ) (ii) छल-कपट से ( )

(ख) बच्चे मित्र बनना चाहते हैं–

(i) दीन-दुखी के ( ) (ii) धनवानों के ( )

(ग) बच्चे प्रार्थना कर रहे हैं–

(i) गुरु जी से ( ) (ii) ईश्वर से ( )

(घ) बच्चे सबसे लेना चाहते हैं–

(i) दुआएँ ( ) (ii) उपहार ( )

2. कविता पढ़कर पंक्तियाँ पूरी करो–

सबका मैं .....,

..... नाम करूँ।

कभी न हो .....

..... वरदान मुझे।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) बच्चे किससे कोसों दूर रहना चाहते हैं?

.....

.....

(ख) यहाँ कैसी वाणी पाने की इच्छा की गई है?

.....

.....

(ग) बच्चे किस बात का शौक रखना चाहते हैं?

.....

.....

(घ) बच्चे किसका सम्मान करना चाहते हैं?

.....

.....

भाषा की बात

1. अर्थ समझकर वाक्य बनाओ–

(क) कोसों दूर – (बहुत दूर)

.....

(ख) दुआएँ मिलना – (आशीर्वाद मिलना)

.....

(ग) नाम करना – (प्रसिद्ध होना)

.....

2. निम्नलिखित शब्दों को उनके उलटे (विलोम) अर्थ से मिलाओ–

(अ)	(ब)
(क) अपनापन	(i) शाप
(ख) वरदान	(ii) अपमान
(ग) अभिमान	(iii) परायापन
(घ) सम्मान	(iv) विनय

3. **समझकर लिखो–**

(क) माता – .....पिता..... (ख) ताऊ – .....

(ग) चाचा – ..... (घ) पंडित – .....

(ङ) मौसा – ..... (च) सुनार – .....

(छ) भैया – ..... (ज) लुहार – .....

कुछ करने के लिए

- **दिनचर्या बताओ–**

काम	समय
सुबह उठना	.....
ब्रश करना व नहाना	.....
पूजा-वंदना करना	.....
विद्यालय जाना	.....
विद्यालय से आना	.....
दोपहर का भोजन	.....
होमवर्क करना	.....
खेलना	.....
रात का भोजन	.....
बड़ों से बातें करना	.....
सोना	.....

- **कोई प्रार्थना गीत सुनाओ।**

रचनात्मक चिंतन

दीवाली मेला

(चित्र वर्णन)

लेना बरफ़ी गरम जलेबी,
सोन पापड़ी रसगुल्ले।
खाओ-खिलाओ नाचो
गाओ ओय बल्ले-बल्ले।

ले लो चकरी बम अनार और फुलझड़ी।
बन जाएगा त्योहार खुशियों की लड़ी।

ठंडा यह जलजीरा है,
सेहत के लिए हीरा है।
रूह अफजा और लीची शर्बत
पियो सभी इंकार करो मत।

लो मुन्नी यह फ्रॉक नई
भाभी जी के लिए साड़ी।
यह स्कर्ट बड़ी सूट करेगी
मिन्नी इसमें खूब जँचेगी।

ले लो गुड़िया या बंदूक,
बंदर यह नाचेगा खूब।
पटरी पर दौड़े यह रेल
इससे खूब जमेगा खेल।

लेना यह मोती की माला,
दीदी, भाभी, मुन्नी, डॉली
झुमके, कंगन, बिंदी, दर्पण
काजल से आँखें लगती बोली।

शगुन करो खीलों से
आई दीवाली रे।
दीप जलाओ कोने कोने
जी भर के।

2 इज़्ज़त की जिंदगी

आप इनके बारे में अपने विचार प्रकट करो। आपको कौन सा जानवर पसंद है और क्यों?

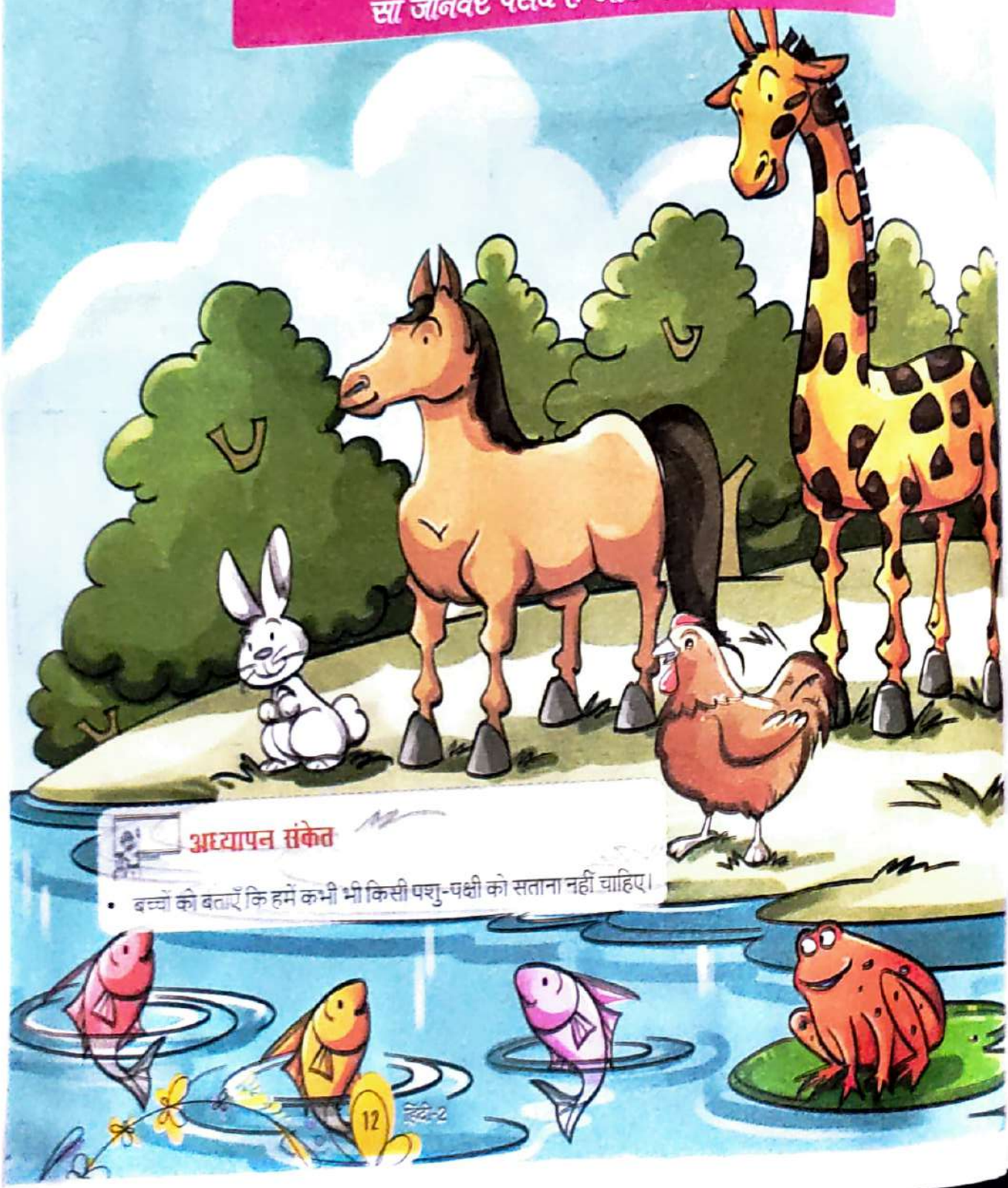

अध्यापन संकेत

- बच्चों को बताएँ कि हमें कभी भी किसी पशु-पक्षी को सताना नहीं चाहिए।

• संसार में वस्तु का मिलना तो कठिन नहीं किंतु मान-सम्मान पाना बड़ा मुश्किल है। इसी बात पर यहाँ कुछ जानवर चर्चा कर रहे हैं—

(एकांकी)

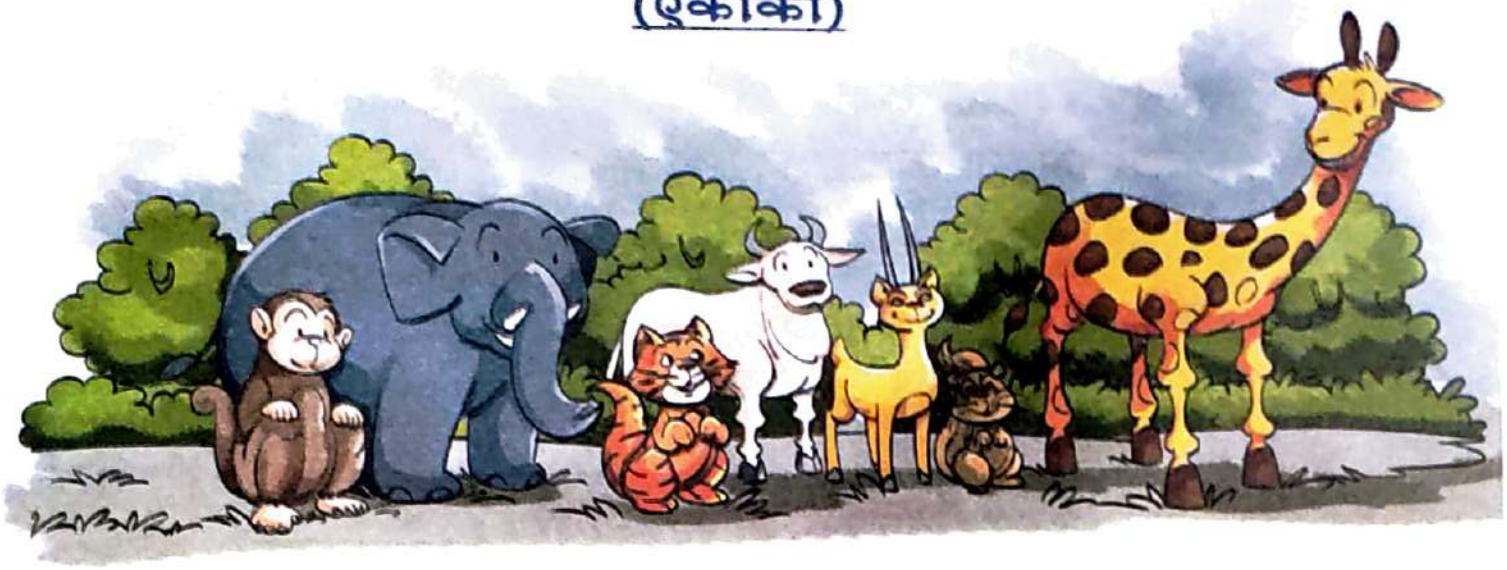

बिल्ली : चोरी कर-करके मेरा मन ऊब गया है। सोचती हूँ अब कोई इज़्ज़त का पेशा अपना लूँ ..... ।

बंदर : वो तो ठीक है, पर अब ऐसा करना कठिन होगा।

बिल्ली : क्यों?

बंदर : इसलिए कि तुम पर अब कोई विश्वास न करेगा। तुम यदि हलवाई का धंधा भी करोगी तो सब सोचेंगें कि कहीं तुमने चीजों में मुँह मारकर उन्हें जूठा न कर दिया हो ..... ।

बिल्ली : हाँ, सच है तभी तो लोग मुझे देखते ही डपटने लगते हैं।

बंदर : यही तो रोना है मुझे देखकर भी लोग कभी हँसते हैं, कभी डरते हैं तो कभी भगाते हैं।

बिल्ली : सचमुच इज़्ज़त की जिंदगी मिलना बड़े भाग्य की बात है।

बंदर : पर कुछ जानवरों को यह मिलती है, जैसे– गाय, मैना आदि।

(सामने से आती गाय)

गाय : तुम ठीक कहते हो। पर क्या तुम्हें पता है कि ऐसा क्यों है? क्योंकि मैं किसी का नुकसान नहीं करती। साधारण भूसा खाती हूँ और मीठा दूध देती हूँ। सींग होते हुए भी उनसे किसी को नहीं डराती। मेरी इज़्ज़त मेरी शराफत के कारण ही है।

बिल्ली : ठीक कहती हो, चालाकी के कारण लोमड़ी का कोई मान-सम्मान नहीं। इसका मतलब है कि ज्यादा चालाकी दिखाना अच्छा नहीं।

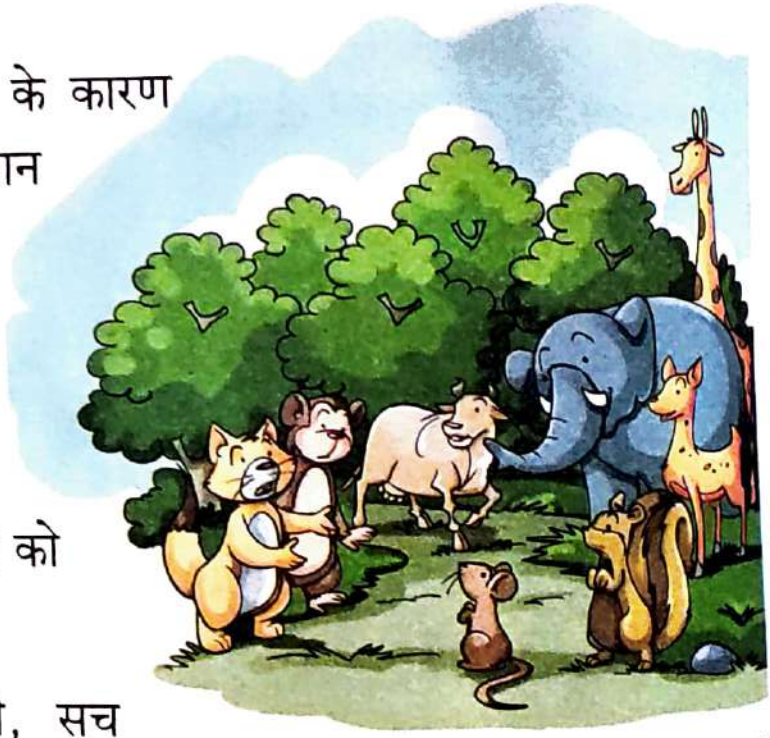

बंदर : हाँ, और इसी प्रकार भालू, चमगादड़ और गधे को भी मान नहीं मिलता।

हिरन : नमस्ते भाई-बहनो। देखो, सच बात तो यह है कि गुणवान को ही मान मिलता है। कोई गुण न भी हो तो भी

अगर हम किसी का नुकसान नहीं करते तो हम अच्छे प्राणी माने जाते हैं। जैसे मैं बस खेलता-दौड़ता हूँ पर किसी को सताता नहीं।

हाथी : मैं तुम्हारी बात से सहमत हूँ। मैं भी भले ही बहुत काम नहीं करता, फिर भी मुझे थोड़ा-बहुत आदर मिल ही जाता है जबकि शेर सबको डरा-धमकाकर राजा तो बन बैठता है पर उसे दिल से कोई सलाम नहीं करता।

गिलहरी : ठीक कहते हो भाई! अगर कोई डर के कारण हमारी बात मान भी ले तो क्या फायदा! हमें उससे कभी प्रेम नहीं होता। अब मुझे ही देखो, मैं किसी को नहीं सताती बस खेलती-खाती रहती हूँ। सभी मुझे देखकर स्नेह से मुस्कराते हैं।

चूहा : सही फरमाती हो दीदी, देखने में तो मैं भी तुम्हारा ही छोटा रूप हूँ पर मेरी नुकसान करने की आदत से सभी चिढ़ते हैं। (तभी उसकी नजर बिल्ली से मिलती है) हे भगवान! बचाओ यह भी यहाँ थी, मुझे ध्यान ही नहीं रहा।

ऊब– बोरियत; इज़्ज़त– सम्मान; भाग्य– किस्मत; शराफ़त– सज्जनता; सहमत– राजी; प्रेम– प्यार, अपनापन; गुणवान– विशेषता।

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

I. सही उत्तर के सामने ✓ लगाओ–

(क) बिल्ली ऊब गई थी–

(i) चोरी करके ( ) (ii) दूध पी के ( )

(ख) इज़्ज़त मिलती है–

(i) बंदर को ( ) (ii) गाय को ( )

(ग) हिरन की बात से हाथी–

(i) सहमत था ( ) (ii) असहमत था ( )

(घ) डराने वाले से कभी नहीं होता–

(i) प्रेम ( ) (ii) घृणा ( )

2. किसने कहा–

(क) "सभी मुझे देखकर स्नेह से मुस्कराते हैं।" .....

(ख) "सच बात तो यह है कि गुणवान को ही प्रेम मिलता है।" .....

(ग) "सही फरमाती हो दीदी।" .....

(घ) "तुम पर अब कोई विश्वास न करेगा।" .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) प्रेम किसे मिलता है?

.....

.....

(ख) बिल्ली क्या चाहती थी?

.....

.....

(ग) गाय को सभी इज़्ज़त क्यों देते हैं?

.....

.....

(घ) चूहा बातें करता-करता क्यों भाग गया?

.....

.....

भाषा की बात

1. समझकर लिखो–

	एक		अनेक		एक		अनेक
(क)	बिल्ली	=	बिल्लियाँ	(ख)	गाय	=	....
(ग)	चूहा	=	....	(घ)	गधा	=	....
(ङ)	भेड़	=	....	(च)	लोमड़ी	=	....

2. पढ़ो और समझो–

(क) प्रेम – क्रेम, प्रण, प्रेत (्र)

(ख) पर्व – पर्वत, शर्बत, गर्दन (र्‍)

(ग) वृक्ष – पृथक, दृग, मृग (ृ)

आपने तीनों तरह की 'रि' की मात्रा का प्रयोग देखा। अब इन तीनों मात्राओं का प्रयोग करके नए शब्द लिखो–

(क) (्र) ....

(ख) (र्‍) ....

(ग) (ृ) ....

3. निम्नलिखित शब्दों को उनके उलटे (विलोम) अर्थ वाले शब्दों से मिलाओ–

(अ)		(ब)	
(क)	इज़्ज़त	(i)	मक्कारी
(ख)	शराफत	(ii)	अवगुण
(ग)	गुण	(iii)	नुकसान
(घ)	फायदा	(iv)	बेइज़्ज़त

कुछ करने के लिए

दिए गए जानवरों के बारे में चार-चार पंक्तियाँ लिखो–

.....

.....

.....

.....

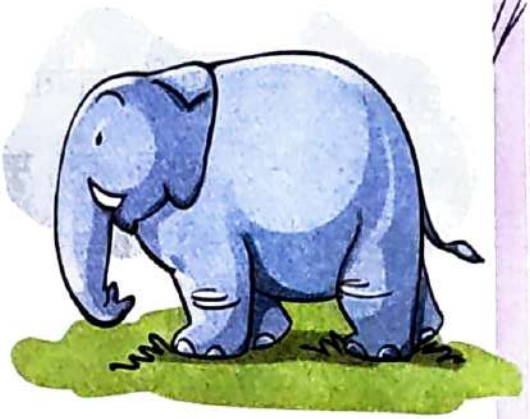

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

सबको कोई न कोई रोजगार करना पड़ता है। धन कमाने के लिए ये लोग क्या करते हैं? बताओ–

दर्जी

डॉक्टर

सुनार

माली

अध्यापक

3 नई ड्रैस

जब आपकी माताजी या पिताजी की तबियत खराब हो जाती है तो आप क्या करते हैं?

अध्यापन संकेत

- बच्चों से पूछें कि क्या वह अपने माता-पिता से ज़िद करके खरीदारी करते हैं। क्या सचमुच उन्हें उन चीजों की आवश्यकता होती है? यह सब क्यों गलत है, समझाएँ।

• कुछ लोग कभी-कभी दिखावे के लिए फिजूलखर्च भी करते हैं। ऐसा करने के क्या परिणाम होते हैं, आइए पढ़ें पढ़कर जानें–

(दैनिक प्रसंग)

"कल रेशम के भाई की शादी है, उसके लिए मुझे सब कुछ नया चाहिए, नई फ्रॉक, नए जूते, नई हेयर क्लिप।" नेहा रूठी सी माँ को कह रही थी।

माँ ने उसे समझाया, "नेहा, अभी पिछले ही महीने तो अपने जन्मदिन पर तुमने यह सब चीजें नई खरीदी हैं। तुम वही पहन लेना।"

"वाह! यह भी कोई बात हुई, मेरी सहेलियाँ क्या कहेंगीं कि वही पुरानी ड्रैस ..... !"

"ठीक है अब जो पैसे मैंने इतनी मुश्किल से बचाए थे कि किसी खास मौके पर काम आएँगे, वह तुम्हारी ड्रैस के लिए खर्च कर दूँगी ..... ।"

"ठीक है, मैं शाम को आपके साथ बाजार चलूँगी।" कहकर नेहा स्कूल चली गई। घर लौटी तो माँ कुछ अस्वस्थ लग रही थी। पूछने पर उन्होंने बताया कि उनके सिर में दर्द है। नेहा ने नाराज सा होकर कहा– "तो इसका मतलब आप बाजार नहीं चलेंगी।" यह कहकर उसने मुँह बिचकाया।

"नहीं-नहीं, तुम नाराज मत होओ, मैं चलूँगी।" माँ ने धीमे से कहा। नेहा खुशी-खुशी तैयार हो गई। बाजार से नेहा ने अपनी पसंद की फ्रॉक, जूते व हेयर क्लिप खरीदे। घर लौटकर वह उन्हें सबको दिखाने लगी।

ठीक समय पर सजधजकर नेहा रेशम के घर पहुँची पर वहाँ तो बड़ी भीड़भाड़ थी। कोई किसी पर ध्यान नहीं दे रहा था। स्त्रियाँ गीत गा रहीं थीं। रेशम सब मेहमानों का खूब ख्याल रख रही थी। वह बार-बार अपनी माँ को कहती कि अब आप आराम करो, शाम को फिर काफी भागदौड़ होगी। रेशम ने नेहा को भी प्यार से जूस पिलवाया। पर किसी ने नेहा के कपड़ों पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसने देखा कि उसके सहपाठी पहले पहनी जा चुकी ड्रैसे पहनकर आराम से घूम रहे हैं।

थकी-हारी नेहा घर लौटी तो उसने देखा कि माँ को काफी तेज बुखार है। पूछने पर माँ ने बताया कि कल महरी नहीं आई थी, माँ ने सारा काम किया तो वह थक गई थी, फिर बाजार भी जाना पड़ा, इसलिए बुखार चढ़ गया।

''माँ, डॉक्टर को बुलवा लो, आपसे तो चला नहीं जाएगा।'' नेहा ने कहा।

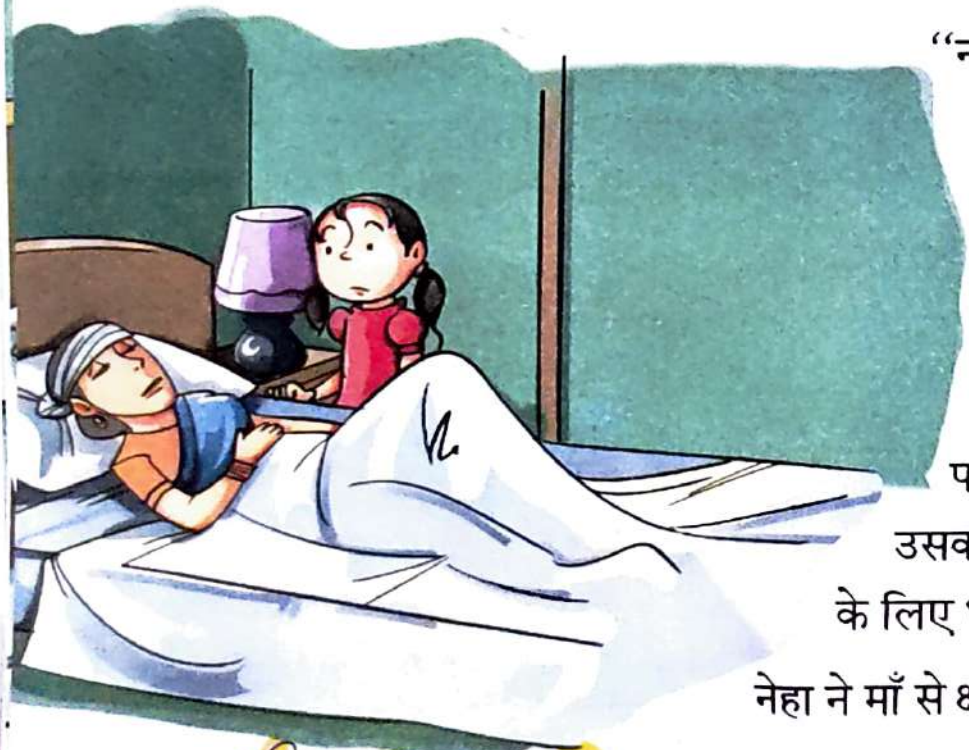

''नहीं, उन्हें देने के लिए मेरे पास फीस के पैसे नहीं हैं। वे सब तो कल तुम्हारी ड्रैस में खर्च हो गए .....''

अब नेहा को अपनी ज़िद पर बड़ी ग्लानि हुई। माँ ने वह पैसे बड़ी मुश्किल से किसी खास जरूरत पड़ने पर प्रयोग करने के लिए रखे थे और उसकी ज़िद के कारण अब डॉक्टर और दवाई के लिए भी पैसे नहीं हैं।

नेहा ने माँ से क्षमा माँगी और उनका सिर दबाने लगी।

शब्द-अर्थ

हेयर क्लिप– बालों में लगाने वाली पिन; अस्वस्थ– बीमार; सहपाठी– साथ पढ़ने वाले; ग्लानि– पछतावा, शर्म; प्रयोग– इस्तेमाल।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) नेहा को जाना था–

(i) यात्रा पर ( ) (ii) एक शादी में ( )

(ख) नेहा ज़िद कर रही थी–

(i) नई ड्रैस लेने की ( ) (ii) आइसक्रीम खाने की ( )

(ग) नेहा ने घर लौटने पर माँ को पाया–

(i) बीमार ( ) (ii) प्रसन्न ( )

(घ) नेहा ने अपनी गलती–

(i) दोहराई ( ) (ii) के लिए क्षमा माँगी ( )

2. सत्य कथन के सामने ✓ तथा असत्य के सामने ✗ लगाओ–

(क) नेहा बहुत समझदार लड़की थी। ( )

(ख) नेहा की माँ के पास बहुत पैसे थे। ( )

(ग) नेहा ने नई ड्रैस लेने की ज़िद पूरी की। ( )

(घ) नेहा ने माँ का सिर दबाया। ( )

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) नेहा को किसकी शादी में जाना था?

.....

.....

(ख) माँ ने नेहा को क्या समझाया?

.....

.....

(ग) क्या सोचकर नेहा ने मुँह बिचकाया?

.....

.....

(घ) माँ को बुखार क्यों चढ़ गया था?

.....

.....

भाषा की बात

1. पढ़ो, समझो और याद करो–

(क) जो ज़िद करे – ज़िद्दी

(ख) जो कहना माने – आज्ञाकारी

(ग) जो झगड़ा करे – झगड़ालू

(घ) जो सेवा करे – सेवक

2. समान अर्थ वाले शब्दों को मिलाओ–

(अ)	(ब)
(क) मेहमान	(i) हठ
(ख) ज़िद	(ii) ज्वर
(ग) बुखार	(iii) औषधि
(घ) दवाई	(iv) अतिथि

3. **जोड़े बनाओ–**

(अ)	(ब)
(क) रुपए	(i) हारी
(ख) थकी	(ii) ताछ
(ग) पूछ	(iii) ढाल
(घ) चाल	(iv) पैसे

रचनात्मक चिंतन

कुछ करने के लिए

- **पता लगाकर सही जगह पर लिखो–**

तुलसी, पेरासिटामॉल, आइडेक्स, शहद

घरेलू दवा	अंग्रेजी दवा
.....	.....
.....	.....

- **क्या आपने भी कभी किसी चीज के लिए ज़िद की है? यदि हाँ, तो क्या वह पूरी हुई? बाद में आपको कैसा लगा? बताओ।**
- **आपके पास क्या-क्या और कितने है? लिखो? क्या आप इन सबका प्रयोग करते है?**

जूते — .....

ड्रैस — .....

खिलौने — .....

3. जोड़े बनाओ–

(अ)	(ब)
(क) रुपए	(i) हारी
(ख) थकी	(ii) ताछ
(ग) पूछ	(iii) ढाल
(घ) चाल	(iv) पैसे

रचनात्मक चिंतन

कुछ करने के लिए

- **पता लगाकर सही जगह पर लिखो–**

तुलसी, पेरासिटामॉल, आइडेक्स, शहद

घरेलू दवा	अंग्रेजी दवा
.....	.....
.....	.....

- **क्या आपने भी कभी किसी चीज के लिए ज़िद की है? यदि हाँ, तो क्या वह पूरी हुई? बाद में आपको कैसा लगा? बताओ।**
- **आपके पास क्या-क्या और कितने है? लिखो? क्या आप इन सबका प्रयोग करते है?**

जूते — .....

ड्रैस — .....

खिलौने — .....

4 विज्ञापन : नई सोच

यदि ये आवाज न लगाएँ तो क्या इनकी चीजें बिकेंगी?

अध्यापन संकेत

- बच्चों से पूछें कि क्या वे गली-मुहल्ले में आने वाले फेरीवालों की आवाज सुनकर कुछ खरीदते हैं। बड़ी दुकानों की बजाय फेरीवालों से खरीदारी करने पर किसे लाभ होगा? विचार करें।

• अपनी वस्तु के गुण बताकर उसे बेचने की कला ही विज्ञापन है। फेरीवाले अपना विज्ञापन कैसे करते हैं? पढ़े इस रोचक पाठ में—

(आस-पास)

सब्जीवाला गली में जोर-जोर से आवाजें लगा रहा था, "लाल टमाटर ..... ऽ .. ऽ ....., हरी-हरी मटर ..... ताजी भिंडी ..... ले लो।"

पुण्या सोचने लगी कि अपनी सब्जी की कितनी विशेषता बता रहा है। पर जो भी हो इतनी जोर-जोर से अपना सामान बेचने के लिए चिल्लाना कितना कठिन है।

तभी दूसरी ओर से एक फलवाला आया और वह गा रहा था, 'मिश्री हो रहे हैं ..... खरबूजे, रसगुल्ले जैसी लीची ले लो ..... ऽ .. ऽ .....।"

'अरे यह भी खूब जोर-जोर से आवाजें दे रहा है।' आवाज सुनकर पुण्या उसके पास पहुँची और बोली "क्या-क्या है आपके पास?"

फलवाला– ये रसीली जामुनें, ये मोती के दानों वाले अनार, शरबत हो रहे अमरूद, सोने जैसा पपीता ....."

"बस-बस बाकी लाल-लाल सेब, चितरीवाले केले तो मैं देख ही रही हूँ ....." पुण्या बोली।

"हाँ मलाई जैसे केले, और गर्मियों की सौगात ये खुशबूदार आम भी बेजोड़ हैं। ....."

फलवाला तारीफ किए जा रहा था।

एक किलो आम लेकर पुण्या घर आई। घर आकर उसने बड़े भैया से पूछा कि "ये फेरीवाले गा-गाकर सामान क्यों बेचते हैं .....?"

भैया बोले– "ये अपनी चीजों का विज्ञापन करते हैं। जैसे बड़ी कंपनियाँ टी०वी०, रेडियो पर विज्ञापन करती हैं। तुमने टी०वी० पर तो कोकाकोला, नूडल्स, सर्फ, फेसक्रीम, स्कूटर और न जाने कितनी चीजों के विज्ञापन देखे होंगे ..... ।"

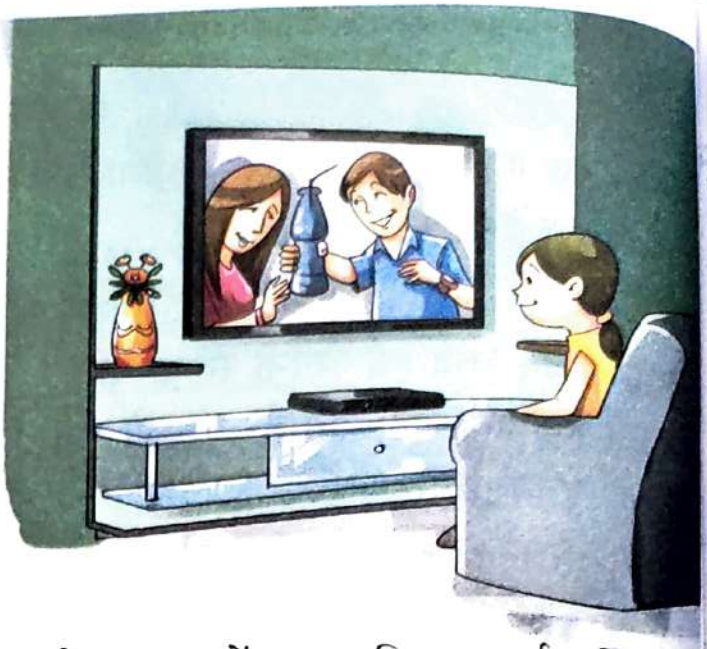

"हाँ भैया, बड़े मजेदार होते हैं वे, उन्हें देखकर उन चीजों के लिए मन ललचाने लगता है।"

"हाँ, इसीलिए तो विज्ञापन दिए जाते हैं पर हमें इनके चक्कर में आकर फिजूलखर्च नहीं बनना चाहिए। ये हमारे खर्चें बढ़ा देते हैं और खुद लाभ कमाते हैं।"

"और ये फेरीवाले ..... " पुण्या ने पूछा।

"नहीं, ये तो आपको सूचना देते हैं और आपको बाजार भी नहीं जाना पड़ता। वस्तु को घर पर ही आप अपनी पसंद से जाँच-परख, सूँघ-समझकर ले सकते हैं ..... । ये बड़ी-बड़ी कंपनियों की तरह भारी मुनाफा नहीं कमाते।"

"हाँ, ठेलेवालों से माँ भी छाँट-छाँटकर, मोल भावकर सब्जी लेती हैं।"

"पुण्या रानी, तुम्हें भी मजा आता है न ऐसे खरीदारी करने पर ..... ।"

"हाँ भैया, स्कूल में हुई फैंसी ड्रैस में भी मैं साड़ी पहनकर सिर पर टोकरी रखकर फेरीवाली बनी थी। मुझे इनाम भी मिला था।" पुण्या ने बताया।

शब्द-अर्थ

विशेषता- खासियत; सौगात- भेंट; लाभ- फायदा; वेजोड़- जिसकी तुलना न हो सके; मुनाफा- भारी लाभ; तारीफ- प्रशंसा।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) सब्जीवाला अपनी सब्जियों की बता रहा था–

(i) गिनती ( ) (ii) विशेषता ( )

(ख) फलवाले ने गर्मियों की सौगात बताया–

(i) आम को ( ) (ii) अनार को ( )

(ग) पुण्या फैंसी ड्रैस प्रतियोगिता में बनी थी–

(i) डॉक्टर ( ) (ii) फेरीवाली ( )

(घ) फेरीवाले गा-गाकर अपनी चीजों का करते हैं–

(i) विज्ञापन ( ) (ii) नुकसान ( )

2. किसने कहा–

(क) "मिश्री हो रहे हैं खरबूजे ....." .....

(ख) "क्या-क्या है आपके पास?" .....

(ग) "ये अपनी चीजों का विज्ञापन करते हैं।" .....

(घ) "हरी-हरी मटर, ताजी भिंडी ले लो।" .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) फेरीवाले आवाजें क्यों लगाते हैं?

.....

.....

(ख) पुष्पा पर विज्ञापन देखकर क्या प्रभाव पड़ता था?

.....

.....

(ग) टी०वी० पर प्राय: किन-किन चीज़ों के विज्ञापन दिखाए जाते हैं?

.....

.....

(घ) फेरीवालों से वस्तु लेने से क्या फायदा है?

.....

.....

भाषा की बात

1. सही मेल करो–

(अ)	(ब)
(क) हरी-हरी	(i) जामुनें
(ख) रसीली	(ii) केले
(ग) मलाई जैसे	(iii) खरबूजे
(घ) मिश्री जैसे	(iv) मटर

2. पढ़ो और समझो–

(क) तारीफ, प्रशंसा, बड़ाई।

(ख) मुनाफा, लाभ, फायदा।

(ग) मजा, आनंद, खुशी।

(घ) लोभ, लालच, लालसा।

इन शब्दों को पढ़ो और इसी प्रकार आगे दिए शब्दों को पूरा करो–

	खरीदारी	खातिरदारी	रिश्तेदारी
(क)	खान	..... –	.....
(ख)	पान	..... –	.....
(ग)	रोशन	..... –	.....
(घ)	पाय	..... –	.....
(ङ)	फूल	..... –	.....

रचनात्मक चिंतन

कुछ करने के लिए

सभी प्रकार के फल चखो और उनके स्वाद के सही कॉलम में उनका नाम लिखो–

खरबूजा, तरबूज, आम, जामुन, लीची, आड़ू, अनार, केला, पपीता, चीकू

स्वाद

खट्टा/खट्टी	मीठा/मीठी	फीका/फीकी	कसैला/कसैली

अपनी पसंद के फलों के चित्र बनाओ–

तेरा देश, मेरा गाँव

(चित्रकथा)

सचमुच ऐसा लगता होगा जैसे झूला झूल रहे हों।

गाँव पहुँचकर नानी हमें मक्का की रोटी और चूल्हे पर पका साग और दाले खिलाती हैं। साथ में पुदीने की चटनी, घर का ताजा मक्खन और लस्सी भी।

मैं तो फ्रिज में रखा मक्खन खा-खाकर सचमुच बोर हो गया हूँ। सुबह-सुबह जैम या मक्खन लगा ब्रेड ही खाने को मिलता है।

पर तुम्हें वहाँ फिल्में देखने को और सैर-सपाटे को बाजार कहाँ मिलते होंगे!

वहाँ हम खेतों-खलिहानों में घूमते हैं। नाना जी के कई फलों के पेड़ों वाला बगीचा है। उनमें से फल तोड़कर खाना, डालों पर बैठे बंदर, तोते, चिड़िया को देखना बड़ा मजेदार लगता है।

सचमुच, शहरों में यह सब कहाँ, यहाँ तो चारों तरफ जाम ही जाम। धुआँ, धूल और शोर। सचमुच तुम्हारा गाँव कितना शांत और सुंदर है।

प्यारे पेड़

(कविता) पठन हेतु

पेड़ हमारे
सच्चे साथी।
उपकारी हैं
यह बहु-भाँति।
फल-छाया हमको देते
बदले में न कुछ लेते।
बस घर आँगन की
थोड़ी मिट्टी में;
महके-चहके
यह हर क्षण में।
आँखों को ठंडक पहुँचाते
नहीं शोर-शराबा मचाते।
अच्छे बच्चों से लगते हैं
सबको ये प्यारे लगते हैं।
इनकी डालों पर पंछी बैठे
मनचाहे गीत सुनाते हैं,
करते हैं ये एहसान बहुत
पर नहीं कभी जताते हैं।

5 मुर्गी की चतुराई

इन सभी के पंख हैं, क्या आप सबको पहचानते हैं? इनके बारे में आप क्या जानते हैं?

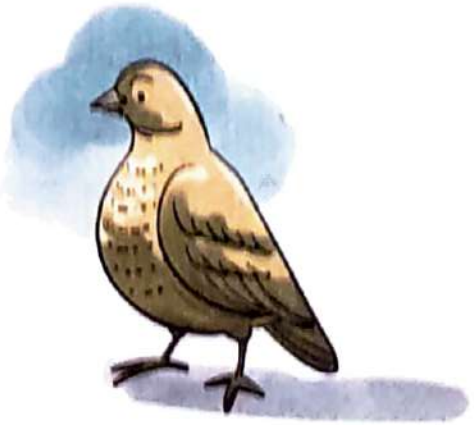

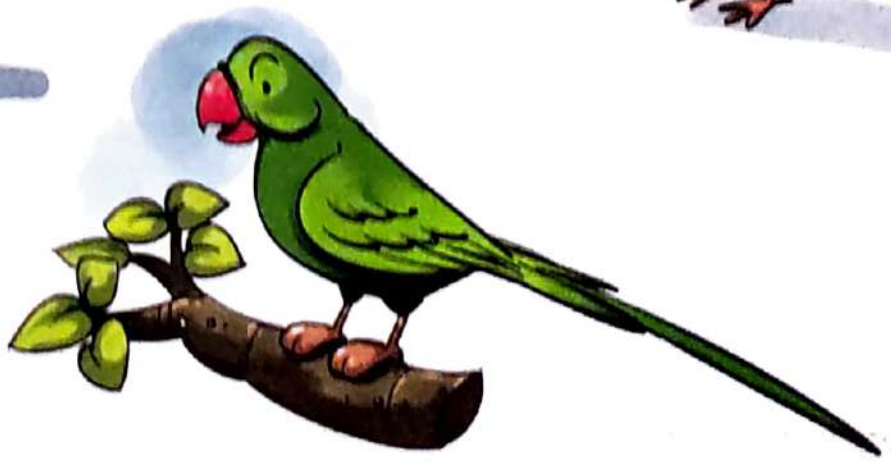

आस्वादन संकेत

- आसपास के वातावरण में विचरण करने वाले पक्षियों के विषय में प्रश्न पूछकर उनके विषय में अधिक जानकारी दें।

• हमारे आसपास प्रायः खतरे मंडराते रहते हैं, पर होशियारी से उन्हें टाला जा सकता है। यही इस कहानी में कहा गया है—

(संवाद)

(पेड़ की डाल पर एक मुर्गा बैठा है। तभी वहाँ से एक लोमड़ी गुजरती है।)

लोमड़ी : *(मुर्गे को देखकर मन में)* अरे! आज तो सुबह-सुबह ही इस मुर्गे के दर्शन हो गए। मुझे तो यहीं अपना भोजन मिल गया।

लोमड़ी : *(मुर्गे से)* मुर्गे भाई नमस्कार! तुम कैसे हो? तुम तो बहुत सवेरे ही उठ गए हो।

मुर्गा : हाँ लोमड़ी मौसी! मैं तो सुबह जल्दी ही उठ जाता हूँ। मुझे बाँग देकर सभी को जगाना पड़ता है ना।

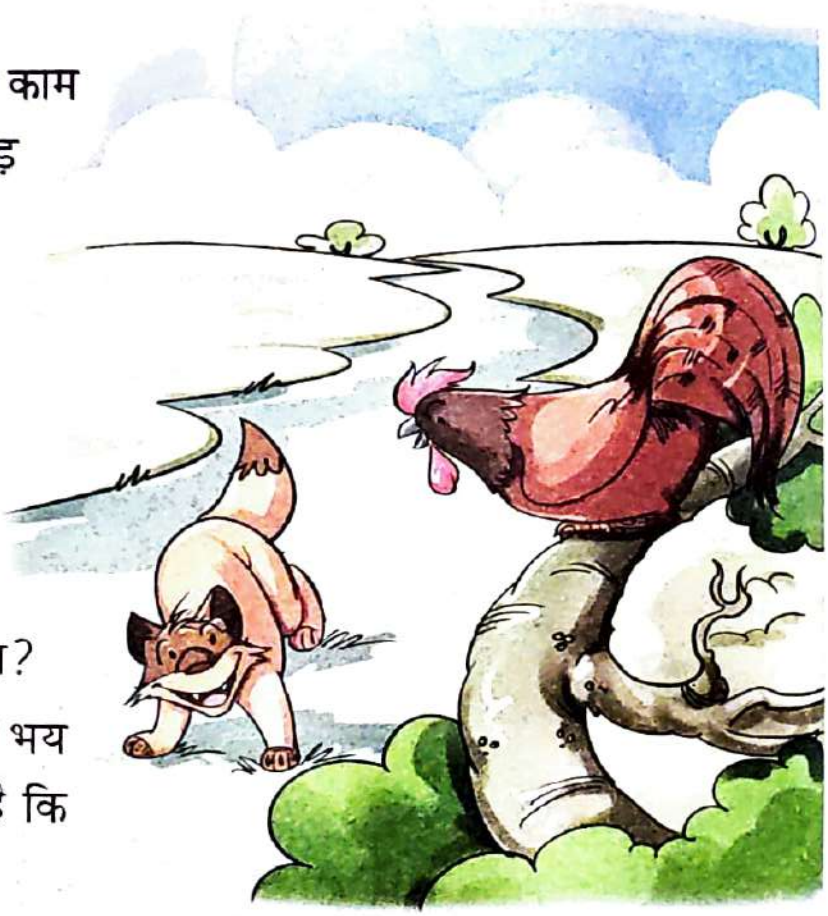

लोमड़ी : यह तो तुम बहुत अच्छा काम करते हो मगर तुम पेड़ पर क्यों बैठे हो? नीचे आओ। हम दोनों घूमने चलते हैं।

मुर्गा : नहीं मौसी! मैं यहीं ठीक हूँ। तुम घूम आओ।

लोमड़ी : अरे क्यों, डर रहे हो क्या?

मुर्गा : हाँ, मुझे बड़े जानवरों से भय लगता है। मुझे लगता है कि वे मुझे खा जाएँगें।

लोमड़ी : लगता है तुमने आज का ताजा समाचार नहीं सुना। सब पशु-पक्षियों में समझौता हो गया है। शेर राजा ने कहा है कि अब कोई भी पशु किसी का शिकार नहीं करेगा।

मुर्गा : यह तो सच में शुभ समाचार है।

(मुर्गा गरदन ऊँची उठाकर दूर देखने लगता है।)

लोमड़ी : मुर्गे भाई, अब नीचे उतरो। वहाँ क्या देख रहे हो?

मुर्गा : मौसी! मुझे तो ऐसा लगता है कि कुछ भयानक शिकारी कुत्ते इसी ओर तेज़ी से दौड़ते हुए आ रहे हैं। बस, उन्हीं को देख रहा हूँ।

लोमड़ी : हे भगवान! क्या सच कह रहे हो? अच्छा मित्र, क्षमा करना। मैं तो भागूँ।

(लोमड़ी भागने लगती है।)

मुर्गा : सुनो मौसी, तुम घबरा क्यों गईं? डरती क्यों हो? अभी तो आप बता रही थीं कि पशु-पक्षियों में तो शिकार न करने का समझौता हो गया है।

लोमड़ी : हाँ, हो तो गया है। पर लगता है कि कुत्तों ने भी तुम्हारी तरह अभी तक यह समाचार नहीं सुना।

(कहकर लोमड़ी भाग जाती है।)

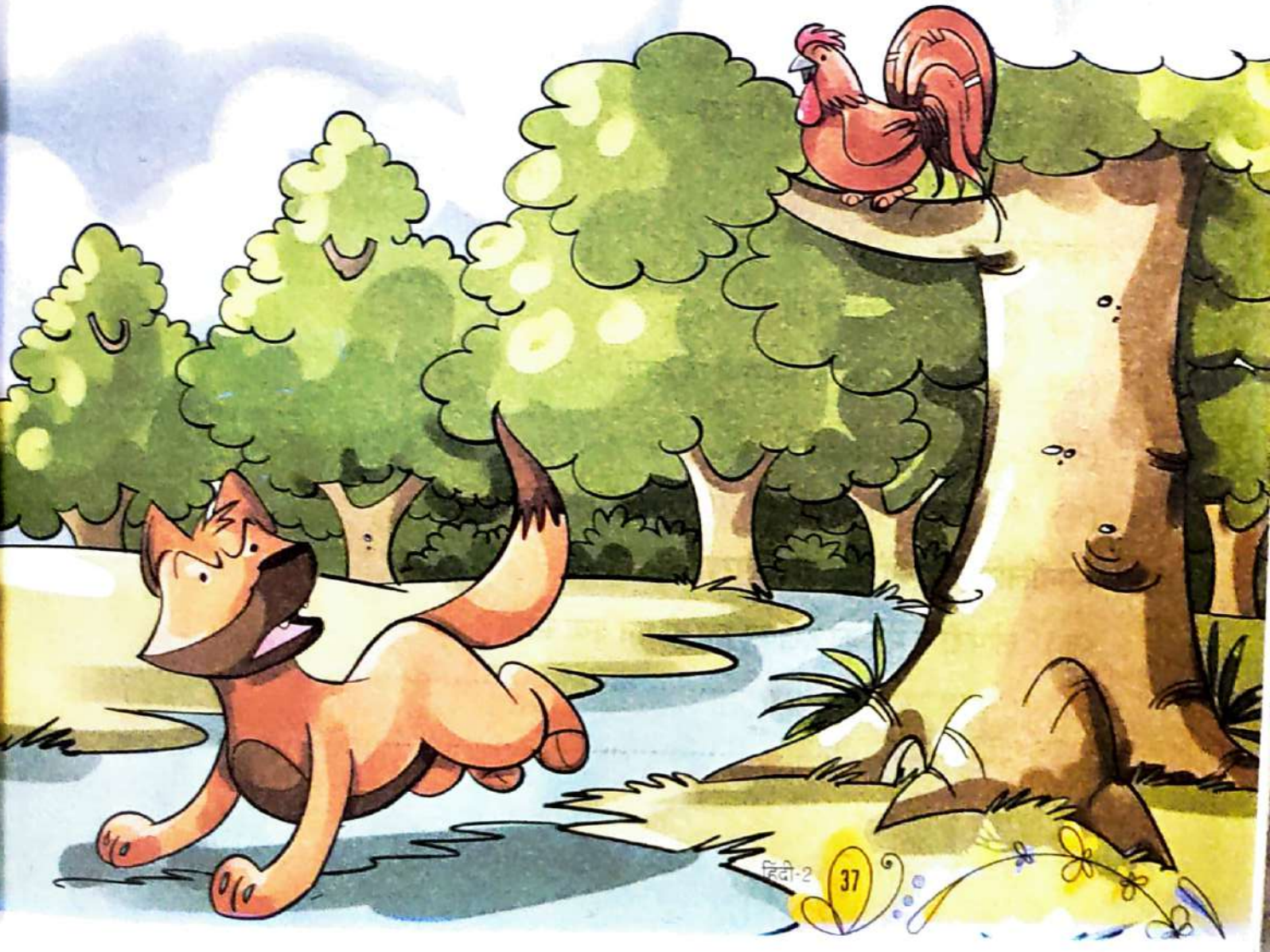

शब्द-अर्थ दर्शन होना– दिख जाना; बाँग– सुबह मुर्गे का आवाज़ लगाना; समझौता– सहमति, आपस का निबटारा; क्षमा– माफ़; भय– डर; शुभ– अच्छा; समाचार– खबर; भयानक– डरावने।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) लोमड़ी ने मुर्गे को देखा–

(i) मित्र के रूप में ( ) (ii) भोजन के रूप में ( )

(ख) लोमड़ी ने मुर्गे से बातें की–

(i) प्यार से ( ) (ii) क्रोध से ( )

(ग) सुबह-सुबह मुर्गे को देनी पड़ती है–

(i) बाँग ( ) (ii) सीटी ( )

(घ) मुर्गा लोमड़ी को भगाने में रहा–

(i) सफल ( ) (ii) असफल ( )

2. किसने कहा–

(क) "वहाँ क्या देख रहे हो?" .....

(ख) "अच्छा मित्र, क्षमा करना मैं तो भागूँ।" .....

(ग) "तुम घबरा क्यों गई?" .....

(घ) "अब कोई भी पशु किसी का शिकार नहीं करेगा" .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) लोमड़ी ने मुर्गे को देखकर मन ही मन क्या सोचा?

.....

.....

(ख) लोमड़ी ने मुर्गे के सामने क्या प्रस्ताव रखा?

.....

.....

(ग) मुर्गे ने किस समाचार को शुभ बताया?

.....

.....

(घ) किसके आने की बात सुनकर लोमड़ी भाग गई?

.....

.....

1. पढ़ो और समझो–

(क) समझौता, सुलह, संधि।

(ख) समाचार, सूचना, खबर।

(ग) सवेरे, प्रातः, तड़के।

2. बहुवचन लिखो– (एक-अनेक)

(क) समझौता – .....समझौते.....

(ख) मुर्गा – .....

(ग) कुत्ता – .....

(घ) खबर – .....

(ङ) किताब – .....

3. नए शब्द बनाओ–

ई

(क) शिकार ....शिकारी........

(ख) दुकानदार ....

(ग) समझदार ....

(घ) व्यापार ....

(ङ) दरबार ....

(च) बीमार ....

रचनात्मक चिंतन

कुछ करने के लिए

- इसी तरह की कोई मजेदार कहानी सुनाओ।
- यदि आपने कोई पालतू पक्षी पाला है तो उसके बारे में कुछ पंक्तियाँ लिखो।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

- मुर्गे पर आधारित आगे दी गई कविता पढ़ो।

सूरज और मुर्गा

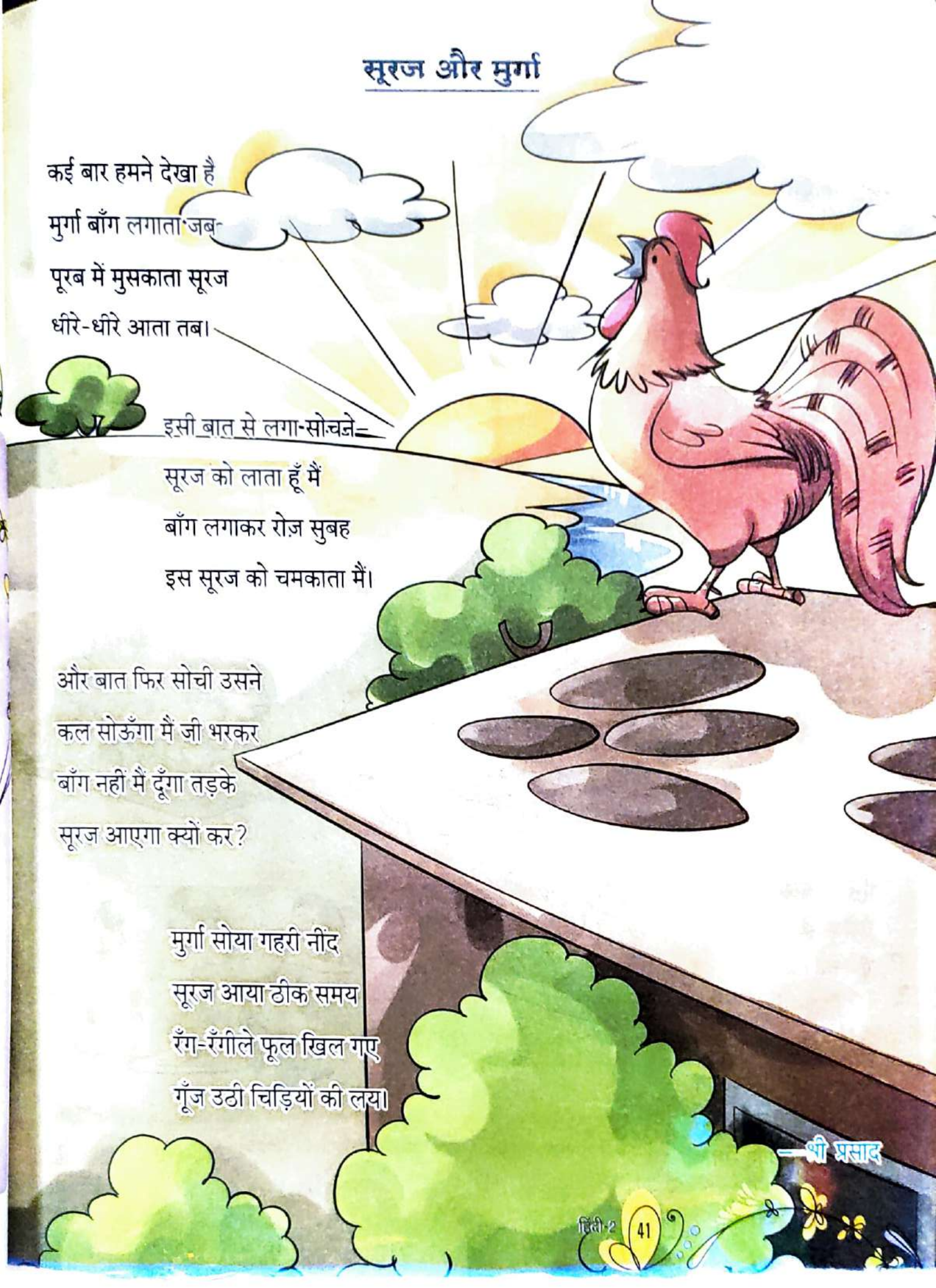

कई बार हमने देखा है
मुर्गा बाँग लगाता जब
पूरब में मुसकाता सूरज
धीरे-धीरे आता तब।

इसी बात से लगा सोचने
सूरज को लाता हूँ मैं
बाँग लगाकर रोज़ सुबह
इस सूरज को चमकाता मैं।

और बात फिर सोची उसने
कल सोऊँगा मैं जी भरकर
बाँग नहीं मैं दूँगा तड़के
सूरज आएगा क्यों कर?

मुर्गा सोया गहरी नींद
सूरज आया ठीक समय
रँग-रँगीले फूल खिल गए
गूँज उठी चिड़ियों की लय।

—श्री प्रसाद

जैसे बताशा

(कविता) पठन हेतु

इतना मधुर बनूँ
जैसे चीनी,
जैसे मिश्री
जैसे बताशा।

इतना सरल बनूँ
जैसे रेखा,
जैसे पानी,
जैसे भोली
मेरी नानी।

इतना चमकूँ
जैसा चंदा
जैसे तारा
जैसे दीपक
का उजियारा।

इतना हँसू मैं
जैसे झरना।
ऐसे गाऊँ
जैसे कन्हैया।

ऐसे रंग बरसाऊँ–
जैसे हो होली।
गूँजे चहुँ दिशि
मेरी ठिठोली।

ऐसे खेलूँ
हिले घर आँगन
छोड़ काम सब
मेरे आए संग।

—डॉ॰ गीता रानी

6 कृष्ण और सुदामा

आप क्या देखकर अपने मित्र बनाते है? रूप-रंग, धन या बुद्धि!

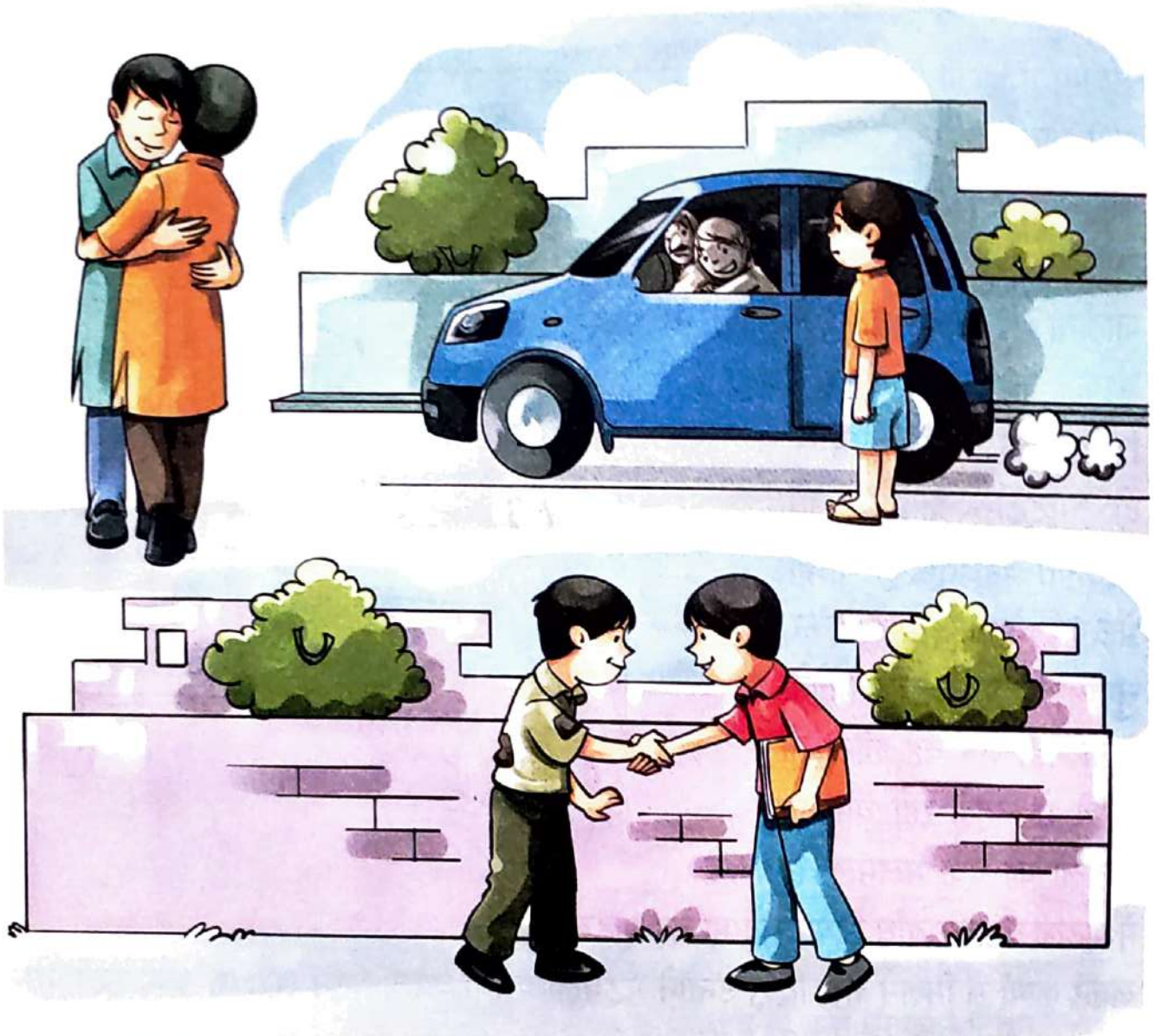

अध्यापन संकेत

- पाठ पढ़ाने के पश्चात बच्चों से कहें कि वह आगे की कहानी अपने घर में बड़ों से सुनकर कक्षा में सुनाएँ।

• प्रस्तुत पाठ में सच्चे मित्र के विषय में एक घटना का विवरण है। इससे पता चलता है कि सच्ची मित्रता किसे कहते है?

(कहानी)

सुदामा और कृष्ण बचपन के गहरे मित्र थे। बड़े होने पर कृष्ण द्वारिका के राजा बने किंतु सुदामा निर्धन ही रहे। सुदामा बड़ी कठिनाई से अपनी पत्नी व बाल-बच्चों का पेट भरते थे। कभी-कभार तो भूखे पेट ही सो जाना पड़ता था। एक दिन उनकी पत्नी ने उनसे कहा- "सुनिए आपके मित्र कृष्ण तो द्वारिका नगरी के राजा हैं। आप क्यों नहीं जाकर उनसे कुछ सहायता माँगते। मुझे आशा है कि वह आपको खाली हाथ नहीं लौटाएँगें।"

सुदामा ने किसी तरह अपनी पत्नी को टाल-मटोल कर पीछा छुड़ाया किंतु उनकी पत्नी रोज यही बात दोहराती। हारकर सुदामा ने अपनी पत्नी से कहा– "चलो, तुम्हारी बात मानकर मैं चला भी जाऊँ तो उनके लिए क्या भेंट लेकर जाऊँगा?" उनकी पत्नी ने जोश में भरकर कहा कि "आप उसकी चिंता न करें, मैं अभी पड़ोस से दो मुट्ठी चावल माँग लाऊँगी। वही तुम कृष्ण को भेंट कर देना।" यह कहकर सुदामा की पत्नी चावल लेने चली गई। जब वह लौटी तो खुशी से चहक रही थी। उसने चावलों को एक मलमल के कपड़े में पोटली बनाकर बाँध दिया। सुदामा वह पोटली लेकर कृष्ण से मिलने चल दिए। उन्होंने मटमैला पुराना कुरता पहन रखा था और फटी पुरानी धोती पहनी हुई थी। पाँव में घिसी-पिटी जूतियाँ थी। कंधे पर चावल की पोटली लिए वह कई दिनों पैदल चलकर द्वारिका पहुँचे। लोगों से पता पूछ-पूछकर वह कृष्ण के महल जा पहुँचे। उन्हें देखकर द्वारपाल बड़ा हैरान हुआ। उसने पूछा– "आपको किससे मिलना है?"

"जी मेरा नाम सुदामा है, मुझे कृष्ण से मिलना है। वे मेरे मित्र हैं ....." सुदामा ने कहा।

"हैं? क्या कहा मित्र" द्वारपाल ने फिर पूछा।

"तुम बस एक बार कृष्ण से जाकर कहो कि सुदामा आए हैं ....."

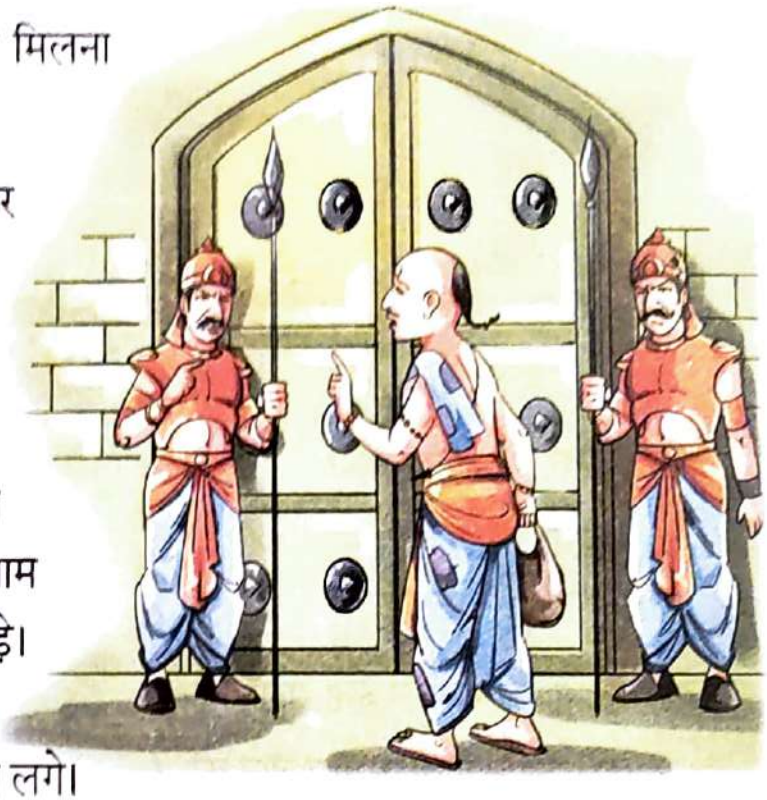

लाचार होकर द्वारपाल कृष्ण के पास गया। कृष्ण ने जैसे ही सुदामा का नाम सुना, वे उनसे मिलने नंगे पाँव दौड़ पड़े। द्वार पर खड़े दीन-दुर्बल सुदामा को देखते ही कृष्ण उनसे लिपटकर रोने लगे।

यह दृश्य देखकर सभी हक्के-बक्के रह गए। कहाँ राजा कृष्ण! हीरे-मोती से जड़े वस्त्र पहने और कहाँ यह फटे-पुराने चिथड़े वस्त्रों वाला सुदामा। पर कृष्ण सुदामा की बाँह पकड़कर महल में ले आए और कहने लगे, "मित्र, इतने दिनों बाद मुझसे मिलने आए, घर पर सब कैसे हैं?"

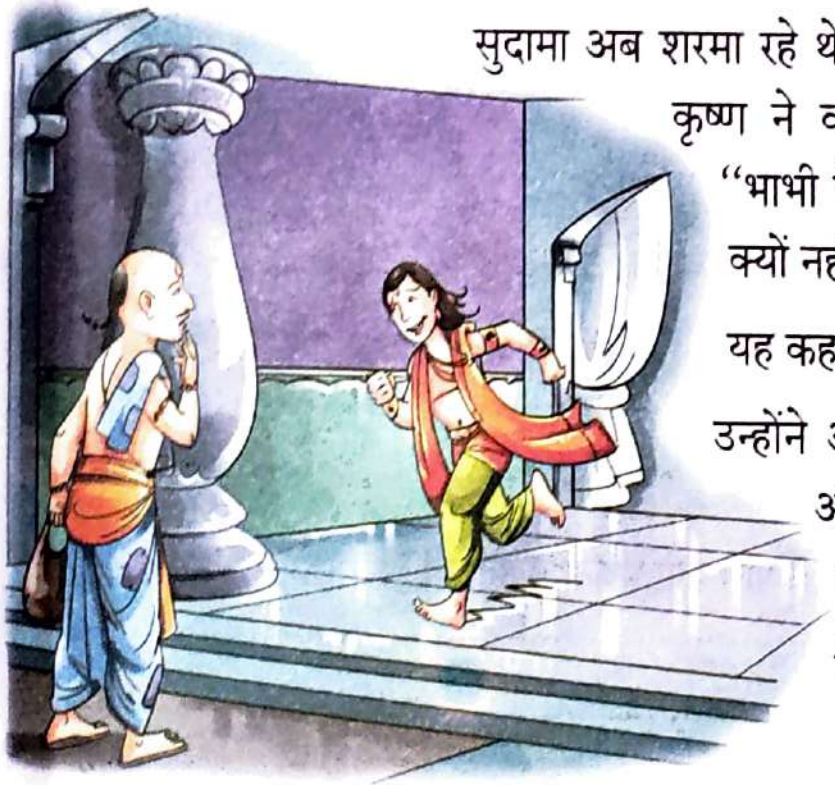

सुदामा अब शरमा रहे थे। वे अपनी पोटली छुपाने लगे तो कृष्ण ने वह प्रेम से छीन ली और बोले– "भाभी ने मेरे लिए भेंट भेजी और तुम देते क्यों नहीं? ....."

यह कहकर वे कच्चे चावल ही खाने लगे।

उन्होंने अपने हाथों से सुदामा के पैर धोए और भोजन करवाया। बहुत दिनों बाद ही उन्हें घर जाने दिया।

ऐसी थी कृष्ण-सुदामा की मित्रता।

शब्द-अर्थ निर्धन- गरीब; द्वारपाल- पहरेदार; दृश्य- नजारा।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. **सही उत्तर पर ✓ लगाओ–**

(क) सुदामा और कृष्ण थे–

(i) मित्र ( ) (ii) रिश्तेदार ( )

(ख) सुदामा की पत्नी ने उन्हें सलाह दी–

(i) अपने पिता के पास जाने की ( ) (ii) कृष्ण के पास जाने की ( )

(ग) सुदामा की पत्नी ने भेंट में भेजे–

(i) कंबल ( ) (ii) चावल ( )

(घ) द्वारपाल सुदामा को देखकर–

(i) हैरान हुआ ( ) (ii) प्रसन्न हुआ ( )

2. **रिक्त स्थान में उचित शब्द भरो–**

(क) कृष्ण द्वारिका के .... थे। *(राजा/मंत्री)*

(ख) सुदामा ने भेंट .... चाही। *(देनी/छुपानी)*

(ग) कृष्ण सुदामा से मिलकर .... हुए। *(प्रसन्न/निराश)*

(घ) कृष्ण ने सुदामा की खातिरदारी .... । *(की/नहीं की)*

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–**

(क) सुदामा की पत्नी उन्हें कृष्ण के पास क्यों भेजना चाहती थी?

....

....

(ख) सुदामा के कृष्ण के पास जाने में क्या अड़चन आ रही थी?

.....

.....

(ग) द्वारपाल ने सुदामा से क्या पूछा?

.....

.....

(घ) सुदामा से कृष्ण ने क्या पूछा?

.....

.....

1. सुमेल करो–

(अ)	(ब)
(क) चावल की	(i) वस्त्र
(ख) हीरे-मोती जड़े	(ii) जूतियाँ
(ग) नंगे	(iii) पोटली
(घ) घिसी-पिटी	(iv) पाँव

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखो–

(क) निर्धन – .....धनी.....

(ख) गोरा – .....

(ग) पास – .....

(घ) कल – .....

(ङ) लंबा – .....

(ख) सुदामा के कृष्ण के पास जाने में क्या अड़चन आ रही थी?

.....

.....

(ग) द्वारपाल ने सुदामा से क्या पूछा?

.....

.....

(घ) सुदामा से कृष्ण ने क्या पूछा?

.....

.....

भाषा की बात

1. सुमेल करो–

(अ)	(ब)
(क) चावल की	(i) वस्त्र
(ख) हीरे-मोती जड़े	(ii) जूतियाँ
(ग) नंगे	(iii) पोटली
(घ) घिसी-पिटी	(iv) पाँव

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखो–

(क) निर्धन – .....धनी.....

(ख) गोरा – .....

(ग) पास – .....

(घ) कल – .....

(ङ) लंबा – .....

3. पढ़ो और समझो–

(क) भेंट, तोहफा, उपहार।

(ख) जोश, उत्साह, उमंग।

(ग) शर्म, लज्जा, ग्लानि।

सहयोगात्मक

कुछ करने के लिए

- दी गई कहानी के अनुसार वेशभूषा धारण कर दो मित्र कृष्ण और सुदामा बनकर विद्यालय मंच पर अभिनय करें।
- पता लगाकर उस पुस्तक का नाम लिखो जो कृष्ण के उपदेश पर लिखी गई है।

.....

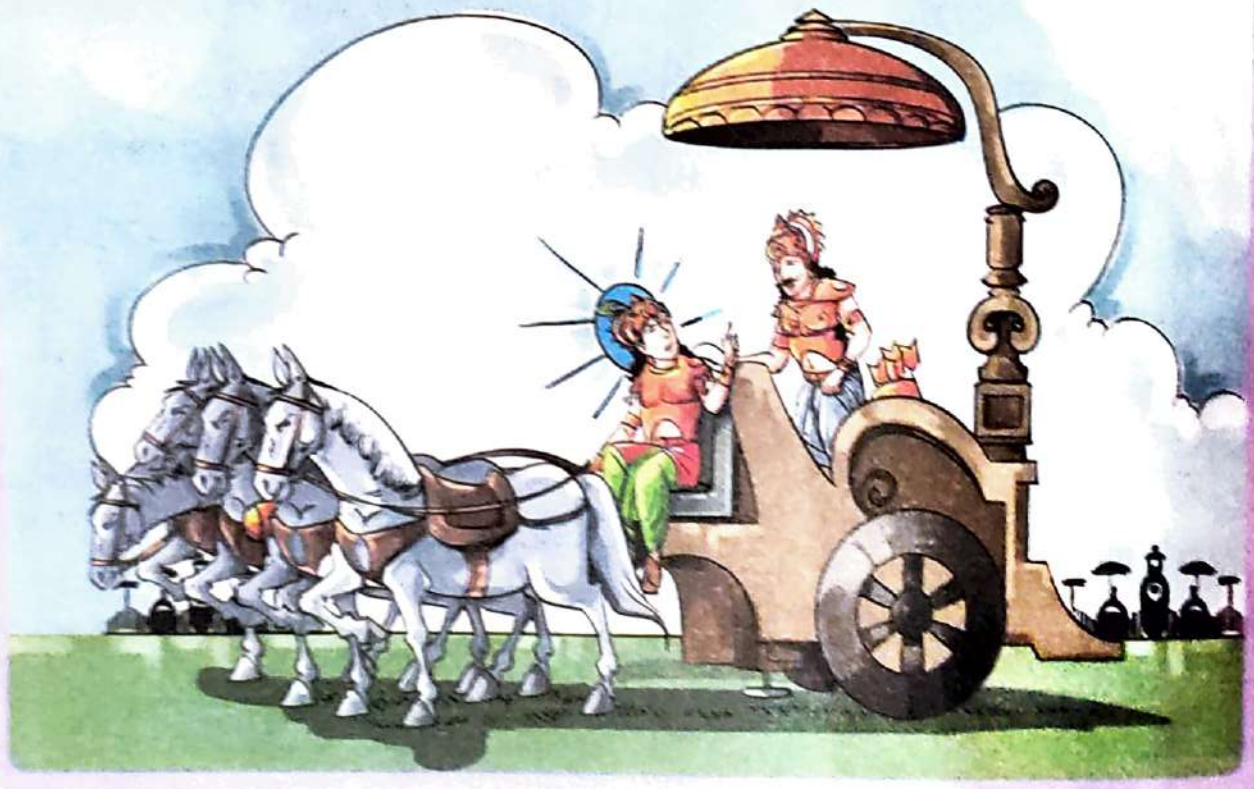

आर्ट गैलरी

(चित्रकथा)

मेरी फौज आजाद हिंद अंग्रेजों को मार भगाए।
देखूँ किसकी हिम्मत है जो मेरे देश को आँख दिखाए।

प्रेम अहिंसा मेरा नारा इसको जो अपनाएगा।
सबको अपना वही लगेगा सदा शांति सुख पाएगा।

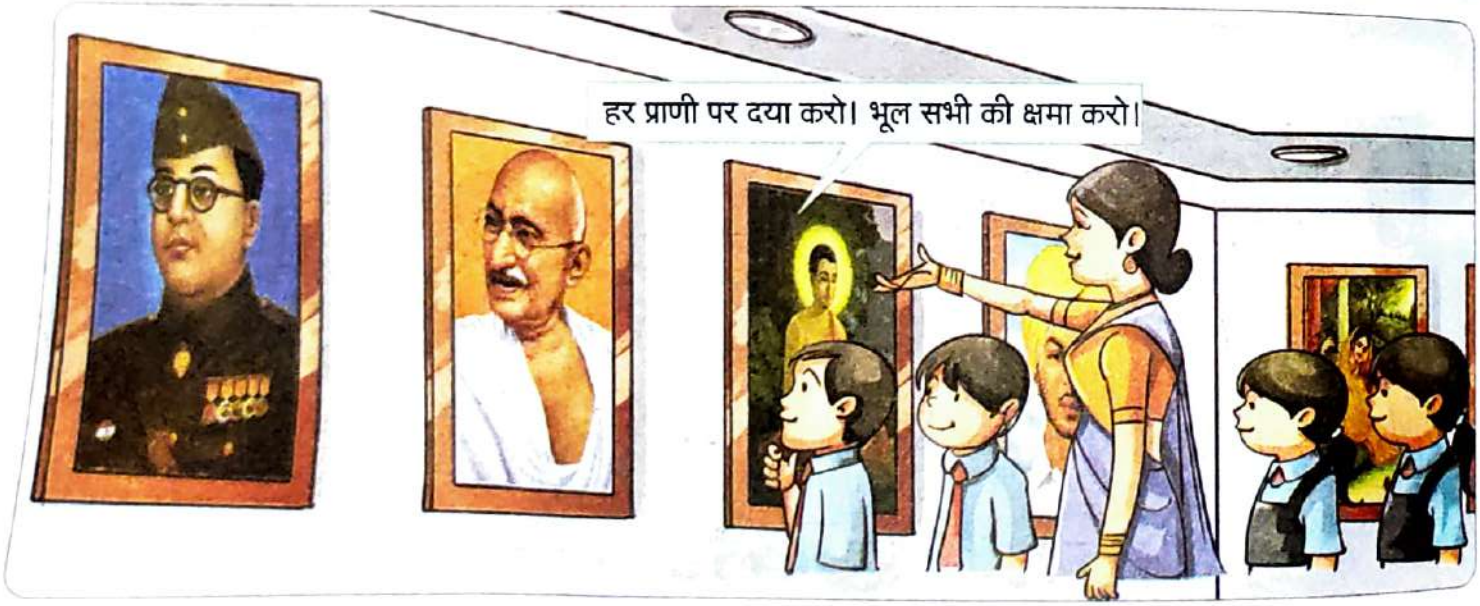
हर प्राणी पर दया करो। भूल सभी की क्षमा करो।

देश के खातिर प्राण न्योछावर।
तन मन धन सब वारूँ इस पर।

मैं तो प्रेम दीवानी गाऊँ भक्ति के गीत
सुनकर मेरे कृष्ण कन्हैया दौड़ आएँगे मीत।

मैं भारत हूँ देश अनोखा। देखो बच्चो,
इसे सँभालो, कोई मुझे दे न फिर धोखा।

7 नील गगन में पंछी

क्या आप इनका दुख महसूस करते हैं–

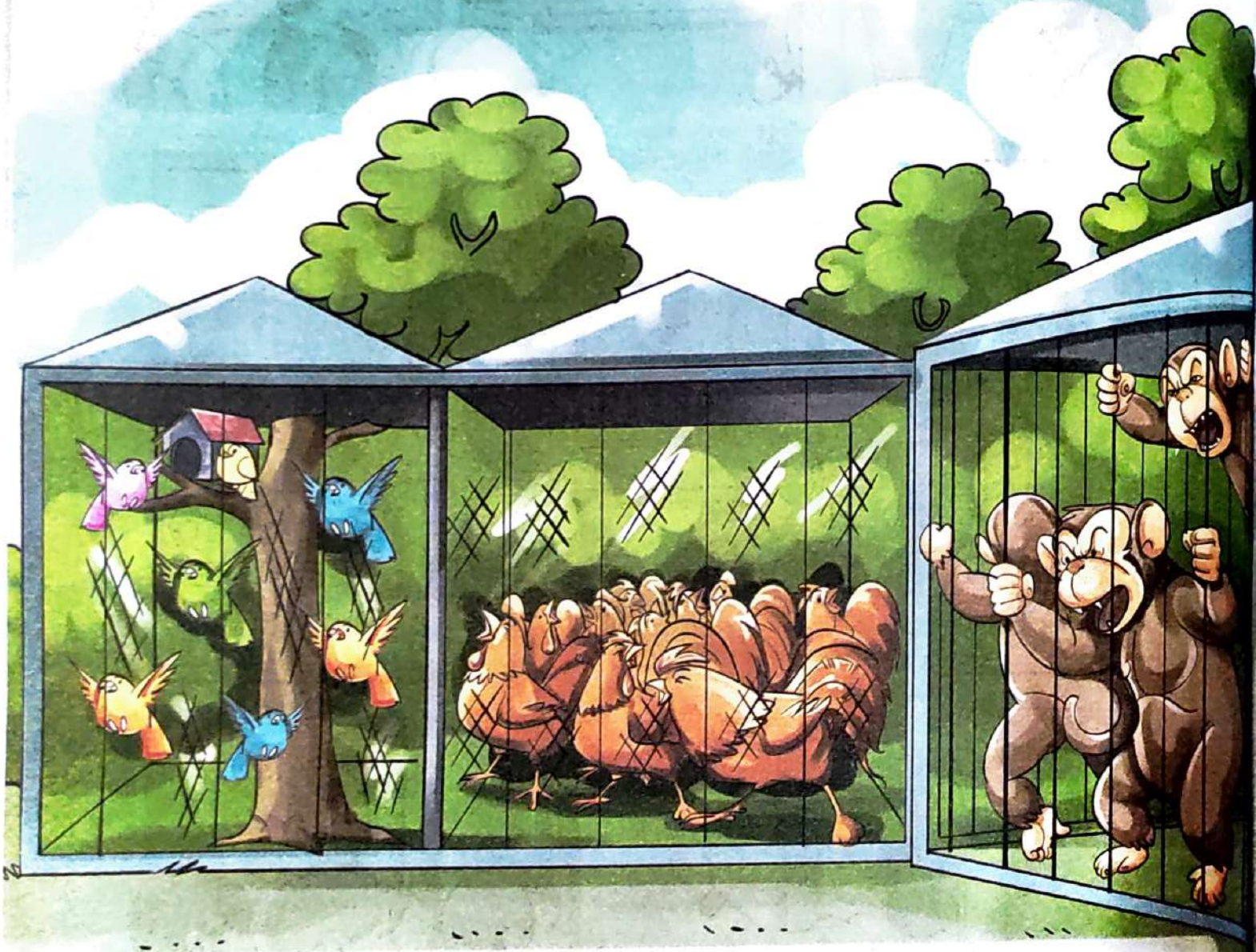

अध्यापन संकेत

- बच्चों से पूछें कि क्या वे पिंजरों में बंद पक्षी की घुटन को समझ सकते हैं? उन्हें किसी भी पशु-पक्षी को न सताने की प्रेरणा दें।

• प्रत्येक प्राणी आजाद रहना चाहता है। ऐसे ही एक कबूतर के बारे में यह कहानी दी गई है—

(कहानी)

एक दिन शाम के लगभग साढ़े सात बजे की बात है कि अचानक बिजली चली गई। मैं धमाचौकड़ी मचाते हुए छत पर पहुँची और पास-पड़ोस के ढेरों बच्चे भी मेरे साथ शोरगुल करते हुए छत पर आ गए। हम सभी खेल में मस्त हो गए। तभी मेरी नजर छत की मुँडेर पर पड़ी जहाँ मुझे कोई सफेद-सी वस्तु दिखाई दी। बहुत गौर से देखने पर पता चला कि वह एक कबूतर है जिसके पैर में एक लंबी रस्सी बँधी हुई थी। मैंने सभी बच्चों से चुप होने को कहा और धीरे-धीरे कबूतर की ओर बढ़ी। मैंने उसे धीरे से अपने हाथों में उठा लिया और उसे घर ले आई। वह एक बहुत ही प्यारा-सा कबूतर था। वह बहुत सहमा और डरा हुआ था। मैंने उसे एक टोकरी में रखकर टोकरी को ऊपर लटका दिया। फिर उसे खाना और पानी दिया, लेकिन वह इतना डरा हुआ था कि उसने कुछ भी नहीं खाया। मैं काफी देर तक उसे खाना खिलाने के चक्कर में जागती रही, लेकिन मम्मी ने मुझे डाँटा और कहा "चलो, अब सो जाओ, सुबह स्कूल भी जाना है।" रात में काफी देर तक मैं कबूतर के बारे में सोचती रही, जिस कारण मुझे ठीक से नींद भी नहीं आई। सुबह जल्दी उठकर मैं कबूतर के पास गई और उसे प्यार करने लगी, लेकिन जैसे ही मम्मी ने मुझे आवाज दी, मैं दौड़कर चादर ओढ़कर पलंग पर लेट

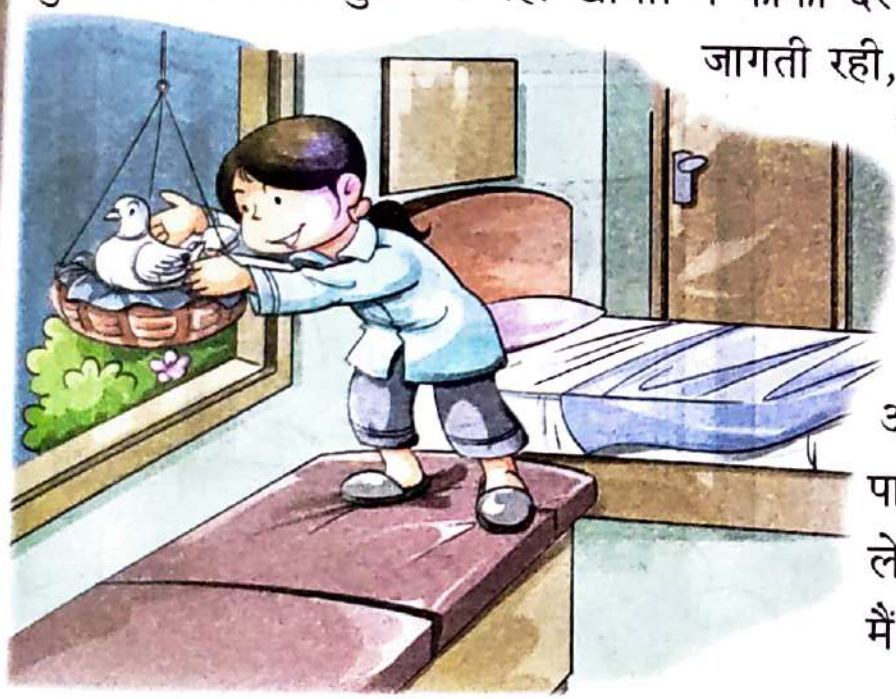

गई। मम्मी ने मेरे पास आकर कहा कि पिंकी, चलो उठो, स्कूल को देर हो रही है। मैंने आँखें मलते हुए कहा कि मम्मी मेरे सिर में दर्द हो रहा है। मम्मी शायद समझ गई थी कि मैं कबूतर की वजह से ऐसा कह रही हूँ। उन्होंने मेरे माथे पर हाथ रखा और कहा बुखार तो नहीं है, चलो जल्दी से उठो स्कूल के लिए तैयार हो जाओ। आखिर मुझे मन मारकर उठना ही पड़ा।

उस दिन स्कूल में मेरा मन किसी से बात करने को नहीं किया। मेरा ध्यान घर पर ही लगा हुआ था। जैसे ही छुट्टी की घंटी बजी, मैं बस्ता उठाकर घर की ओर भागी। घर पहुँचते ही मैंने बस्ता पटका और सीधे कबूतर के पास गई, उसे खाना-पानी दिया और बहुत-सा प्यार किया। अब तो रोज ऐसा ही होता। मम्मी ने मुझे बताया कि कबूतर बहुत ही सीधा पक्षी है। यह किसी को भी नुकसान नहीं पहुँचाता। उन्होंने बताया कि तोता तो कई बार उँगली में काट लेता है, लेकिन कबूतर कभी नहीं काटता। मैं सारा दिन कबूतर को अपने कंधे पर बैठाकर पूरे घर में घूमती, क्योंकि हमारा घर चारों तरफ से बंद रहता, इसीलिए कबूतर कहीं बाहर भी नहीं जाता। मैं उसके मुँह में एक-एक दाना गेहूँ का खिलाती और वह बड़े प्यार से मेरे हाथों से गेहूँ के दाने खाता।

हम सभी उसे बहुत प्यार करते थे। इसीलिए हमने उसे 'प्यारे' कहना शुरू कर दिया। जैसे ही मैं उसे प्यारे कहकर आवाज देती, वह गुटर गूँ-गुटर गूँ करता। मानों मेरी बातों का जवाब दे रहा हो। मैं अक्सर उसको खिड़की पर बैठा देती। खिड़की पर जाली लगी हुई थी। वहाँ से वह पेड़-पौधों को बड़े ध्यान से देखता और अगर कोई चिड़िया दिख जाती तो उसे अपनी आवाज में 'गुटर गूँ-गुटर गूँ' करके कुछ कहने की कोशिश करता।

मुझे प्यारे बहुत अच्छा लगता था, लेकिन धीरे-धीरे मैंने महसूस किया कि वह बाहर जाना चाहता है और दूसरे पक्षियों की तरह उड़ना चाहता है। मैं जब भी उसे देखती, मुझे लगता वह उदास है, लेकिन मैं उसे बहुत प्यार करती थी, इसलिए उसे छोड़ना नहीं चाहती थी और मैं उसे हर वक्त अपने पास रखने की कोशिश करती थी।

एक दिन की बात है बहुत ही सुहावना मौसम था। काले-काले बादलों से सारा आसमान भरा हुआ था। ठंडी-ठंडी हवाएँ चल रही थीं। चारों तरफ पक्षी चहचहा रहे थे। इतने सुहावने मौसम में हर किसी का मन खुशी से झूम रहा था। मैंने प्यार से प्यारे को गोदी में उठाया और छत पर ले गई। इतने सुहावने मौसम को देखकर प्यारे बहुत खुश हुआ और मैं भी बहुत खुश थी। तभी अचानक प्यारे ने अपने पंख पूरी तरह फैलाए। मैंने उसे पकड़कर रखना चाहा, लेकिन वह अपने पंख फड़-फड़ाकर तेजी से ऊपर की ओर उड़ गया। वह इतना ऊपर उड़ गया, जैसे कोई बहुत दूर उड़ती पतंग। मैं हताश-हैरान सी 'प्यारे-प्यारे' चिल्लाती रही।

प्यारे दूर आसमान में घंटों गोल-गोल चक्कर काटता रहा और मैं उसे अपनी छत से कटी पतंग की तरह देखती रही। जैसे शायद वह वापस आना चाहता था। मगर उसे रास्ता नहीं मिल रहा था। प्यारे के जाने के बाद मुझे बहुत दुख हुआ, लेकिन धीरे-धीरे मुझे यह अहसास हो गया कि आजाद पंछी को चाहे हम कितना भी सुख से रखें, वह कैद में रहकर कभी खुश नहीं रह सकता। भगवान ने उनके लिए जो प्रकृति बनाई है वह उसमें आजाद घूमना और उड़ना पसंद करते हैं। किसी भी पंछी को पिंजरे में रखने से उसकी आजादी छिन जाती है। वह पक्षी हमें कुछ

बोल नहीं सकता, लेकिन उसका मन अंदर से रोता रहता है और वह आजाद होना चाहता है। पक्षी प्रकृति की गोद में ही सुंदर लगते हैं, उनको कभी पिंजरे में बंद नहीं करना चाहिए। उस दिन के बाद मैंने यह प्रण किया कि अब कभी किसी पक्षी को पिंजरे में बंद करके नहीं रखूँगी।

मुझे जब भी किसी पक्षी से प्यार करने का मन करता, तो मैं अपनी छत की मुंडेर पर बहुत सारे गेहूँ के दाने और पानी रख देती हूँ और ढेरों पक्षी आकर दाना चुगकर पानी पीकर उड़ जाते हैं, मैं उन्हें देखकर बहुत खुश होती हूँ।

—मोनिका माथुर

शब्द-अर्थ

धमाचौकड़ी– शोर शराबा, ऊधम; सहमा– डरा हुआ; अहसास– महसूस; गौर– ध्यानपूर्वक; प्रण करना– शपथ लेना।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) कबूतर के पैर में बँधी थी–

(i) घंटी ( ) (ii) रस्सी ( )

(ख) कबूतर था–

(i) डरा-सहमा ( ) (ii) बहुत खुश ( )

(ग) पक्षी चाहता है–

(i) आजाद रहना ( ) (ii) पिंजरे में रहना ( )

2. सत्य कथन के सामने ✓ तथा असत्य कथन के सामने ✗ लगाओ–

(क) पिंकी कबूतर बाजार से लाई थी। ( )

(ख) पिंकी स्कूल नहीं जाती थी। ( )

(ग) पिंकी प्यारे का बहुत ध्यान रखती थी। ( )

(घ) पिंजरे में बंद पंछी का मन रोता है। ( )

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) मुंडेर पर दिखाई देने वाली सफेद सी चीज क्या थी?

.....

.....

(ख) पिंकी कबूतर को कहाँ बैठाकर पूरे घर में घुमाती थी?

.....

.....

(ग) सबसे पहले कबूतर को पिंकी ने कहाँ रखा था?

.....

.....

(घ) पिंकी किन्हें देखकर खुश होती है?

.....

.....

भाषा की बात

1. पढ़ो और समझो–

(क) कैद, जेल, कारागार।

(ख) खुश, प्रसन्न, आनंदित।

(ग) पंछी, पक्षी, विहग।

(घ) आजादी, स्वतंत्रता, स्वाधीनता।

2. सही मेल करो–

(अ)	(ब)
(क) कटी	(i) चक्कर
(ख) गोल	(ii) मौसम
(ग) सुहावना	(iii) खुशी
(घ) सच्ची	(iv) पतंग

3. **अर्थ समझकर वाक्य बनाओ–**

(क) मन मारकर – मजबूरी से

.....

(ख) धमाचौकड़ी करना – हल्ला-गुल्ला करना

.....

रचनात्मक चिंतन

कुछ करने के लिए

- एक कबूतर का चित्र बनाओ–

- इस वाक्य को चार्ट पेपर पर लिखकर रंगों से सजाओ और कक्षा में लगाओ–

आजादी सबका अधिकार है।

8 गीत गाया सब्जियों ने

- इस गीत नाटिका में सब्जियाँ अपना-अपना परिचय दे रही हैं।

(गीत नाटिका)

गाजर : लाल-लाल मैं लाल बनाऊँ
गाल, बाल, आँखें चमकाऊँ।
मुझसे बनता है जो हलवा
उसका नहीं कोई मुकाबला।

मूली : गोरी चिट्टी अंगरेजन सी,
पहनूँ हरी लहराती घघरी।
मुझसे भरे पराँठे खाओ
बस फिर मेरे ही गुण गाओ।

मटर : भरी मोतियों जैसे दाने
नरम-नरम है देह हमारी।
हो पुलाव या आलू संग में
मेरी सब्जी बने करारी।

अध्यापन संकेत

- बच्चों को बताएँ कि हमें सारी सब्जियाँ खानी चाहिए क्योंकि वे हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक हैं।

बैंगन : गोल भी हूँ और लंबा भी
सिर पर मेरे मुकुट सजा
मेरा भुरता, मेरी सब्जी
का है कुछ खास मजा।

प्याज : मैं हूँ परतों वाला ऐसा,
जैसे हो कोई गहरा राज।
हर सब्जी के साथ निभूँ मैं
नहीं किसी से भी नाराज।

टमाटर : रंग भी सुंदर, अंग भी सुंदर
फल-फूलों से कम भी नहीं,
बिन मेरे न लगे रसभरी
चाहे हो कोई सब्जी।

आलू : सबसे सस्ता, सबसे खस्ता
चाहे जितने रूप बना लो,
चाहे मटर हो या बैंगन हो
जिसके चाहे साथ बना लो।

टिंडा : मैं हलका पचता हूँ सबको
भले रोज ही खा लो मुझको।
बूढ़े, बच्चे सभी को हितकर,
बड़ा उपयोगी सँभालो मुझको।

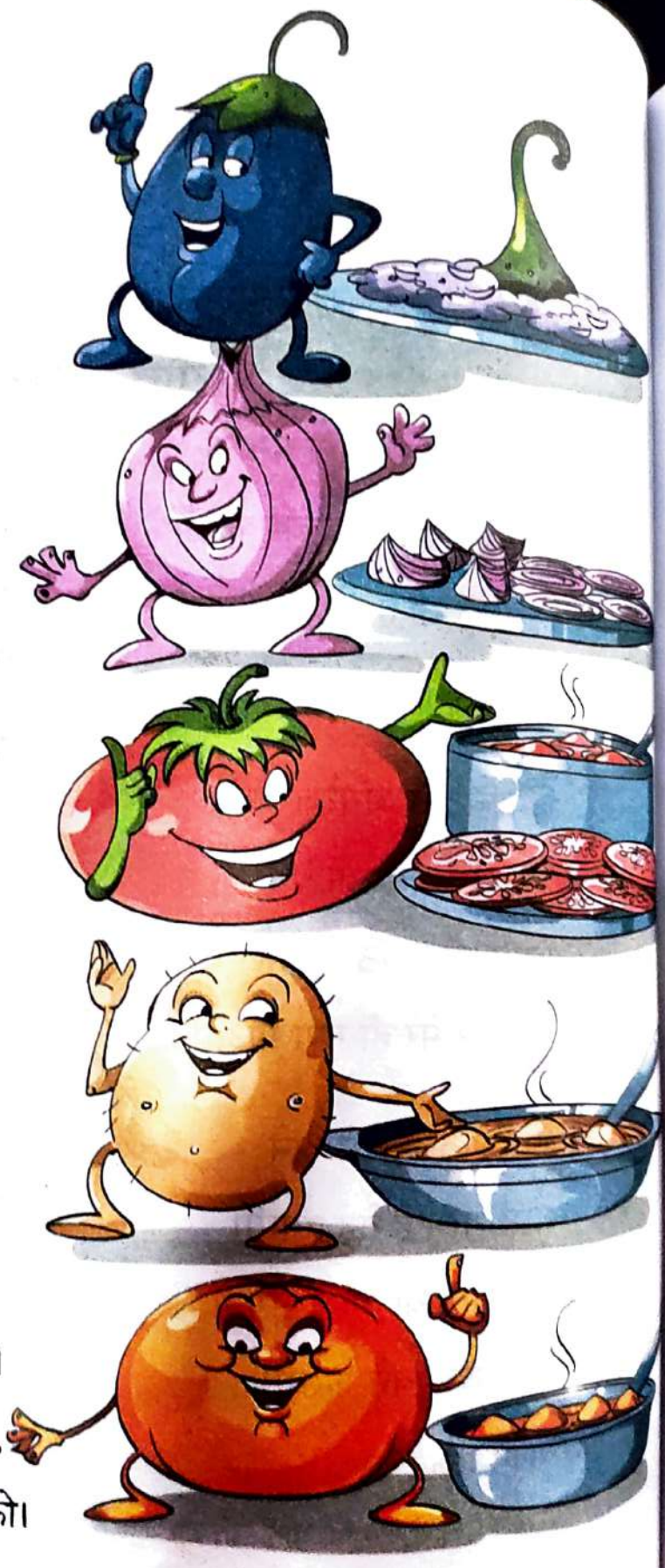

पुदीना : पेटदर्द या जी मिचलाए
तो मुझको जरूर आजमाए।
मेरी चटनी खुशबूदार,
जैसे थाली में आए बहार।

करेला : भले हूँ कड़वा पर उपयोगी,
सब्जी मेरी खाते सेहतमंद
हो चाहे या हो कोई रोगी।

नींबू : मैं हूँ नींबू मुझे निचोड़ो
मुझे काट लो फिर न छोड़ो।
मनचाहा लो मुझसे काम
पिओ शिकंजी, या डालो अचार।

भिंडी : लंबी पतली मैं शरमीली
नाजुक हूँ बड़ी छैल-छबीली
बनूँ कुरमुरी बड़ी करारी,
मैं हूँ सब बच्चों की प्यारी।

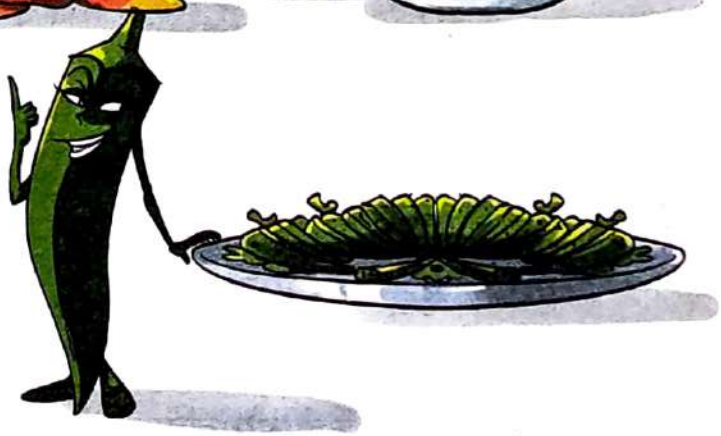

शलगम : नाम है शलगम पर नहीं कोई गम,
मैं बड़ा हलका और सरल हूँ।
कुतर लो, कस लो, काटो उबालो–
जैसा चाहो वैसा बना लो।

—डॉ० गीता रानी

शब्द-अर्थ

खुशबूदार- सुगंधित; सेहतमंद- स्वस्थ; नरम- मुलायम; राज- भेद; खस्ता- करारा; नाराज- रूठा।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) बाल, गाल, आँखें चमकती हैं–

(i) टिंडा खाने से ( ) (ii) गाजर खाने से ( )

(ख) मूली ने खुद को बताया है–

(i) अंगरेजन जैसी ( ) (ii) बंजारिन जैसी ( )

(ग) कड़वी पर उपयोगी सब्जी है–

(i) करेला ( ) (ii) लौकी ( )

(घ) पुदीना से बनती है–

(i) सब्जी ( ) (ii) चटनी ( )

2. किसने कहा–

(क) "मुझसे भरे पराँठे खाओ" .....

(ख) "मेरी सब्जी बने करारी" .....

(ग) "गोल भी हूँ और लंबा भी" .....

(घ) "हर सब्जी के साथ निभूँ मैं" .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) भिंडी ने अपनी क्या-क्या विशेषताएँ बताईं?

.....

.....

(ख) किस सब्जी को रोगी और सेहतमंद दोनों खा सकते हैं?

.....

.....

(ग) किससे शिकंजी और अचार दोनों बन सकते हैं?

.....

.....

(घ) किसका रंग और अंग दोनों सुंदर हैं?

.....

.....

भाषा की बात

1. **लय बनाने वाले शब्द लिखो–**

(क) खुशबूदार – .....बहार..... (ख) हमारी – .....

(ग) राज – ..... (घ) उपयोगी – .....

2. **निम्नलिखित शब्दों को उनके विलोम शब्दों से सुमेल करो–**

(अ)	(ब)
(क) खुशबू	(i) व्यर्थ
(ख) उपयोगी	(ii) कमजोरी
(ग) सेहत	(iii) भारी
(घ) सरल	(iv) बदबू
(ङ) हल्का	(v) कठिन

3. दी गई सब्जियों के विषय में लिखें। जो आप लिखेंगे, वह उनकी विशेषता होने के कारण विशेषण कहलाएँगे–

सब्जी	रंग	आकार
(क) मूली	सफेद	लंबी, चपटी, गोल
(ख) भिंडी	.....	.....
(ग) टमाटर	.....	.....
(घ) आलू	.....	.....
(ङ) नींबू	.....	.....
(च) मटर	.....	.....
(छ) करेला	.....	.....
(ज) टिंडा	.....	.....

रचनात्मक चिंतन

कुछ करने के लिए

- सब्जी की इस टोकरी में अपनी पसंद की सब्जियों में रंग भरो–

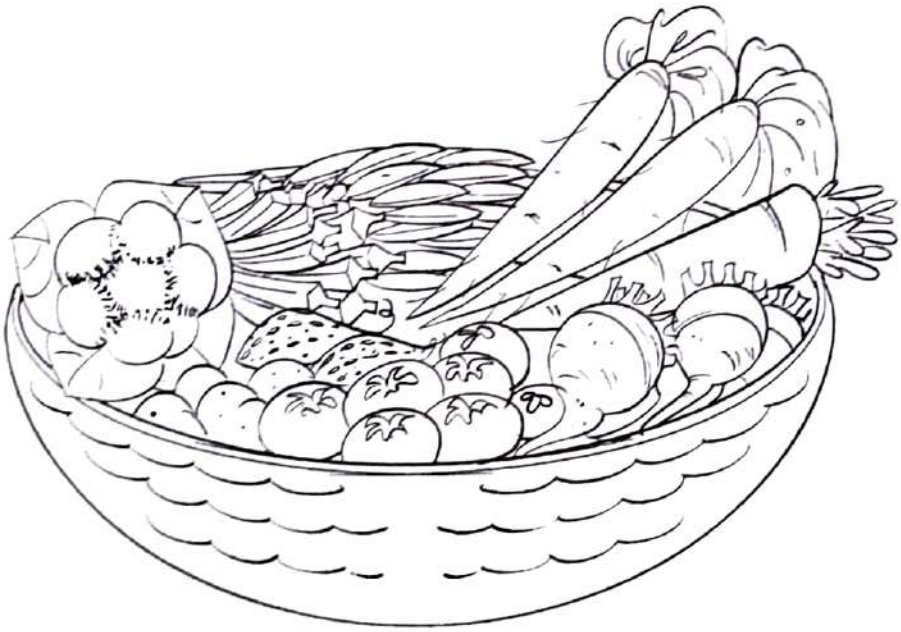

- कुछ सब्जियों के नाम लिखकर उनके आजकल के भाव पता करके लिखो–

	नाम	भाव
1.	.....	.....
2.	.....	.....
3.	.....	.....
4.	.....	.....
5.	.....	.....
6.	.....	.....
7.	.....	.....
8.	.....	.....

- आपकी पसंद की सब्जी कैसे बनती है? इसका पता लगाकर कक्षा में बताओ, और उसका चित्र भी बनाओ।

कुएँ में चाँद

(मनोरंजक कहानी) पठन हेतु

एक जंगल था। उसमें एक कुआँ था। उस कुएँ के समीप चार बंदर रहते थे। उनमें से एक की आँखें बहुत बड़ी थीं, एक के कान बहुत बड़े थे, एक के हाथ बहुत लंबे थे तो एक की पूँछ बहुत लंबी थी। चारों बंदर बहुत नटखट थे। वे कुएँ के चारों ओर चक्कर लगाते रहते तथा उछल-कूद करते रहते थे।

एक बार वे कुएँ के पास खेल रहे थे। आकाश में पूनम का चाँद निकला हुआ था। उसकी परछाई कुएँ में पड़ रही थी। कुएँ में चाँद की परछाई देखकर बड़ी आँखों वाले बंदर ने कहा- "भाइयो, देखो, देखो, चाँद कुएँ में गिर गया है।" बाकी तीनों बंदर भी कुएँ में चाँद की परछाई देखकर चिल्लाने लगे- "हे भगवान! चाँद कुएँ में गिर गया। चाँद कुएँ में गिर गया।"

तभी लंबे हाथ वाला बंदर बोला- "आओ मिलकर चाँद को कुएँ से निकाल दें।" लंबी पूँछ वाला बंदर बोला- "मैं अपनी पूँछ को पेड़ से लपेटकर उलटा लटक जाता हूँ।" "मैं अपने पैरों को इसके हाथों में पकड़कर लटक जाता हूँ।" लंबे कान वाले ने कहा। बड़ी आँखों वाला बंदर लंबे कान वाले बंदर के हाथों में अपने पैर पकड़ाकर

लटक गया तथा लंबे हाथ वाले बंदर ने उसके हाथों में अपने पैर पकड़ा दिए।

अब अपने लंबे हाथों से वह चाँद को कुएँ से निकालने का प्रयत्न करने लगा। मगर पानी के हिलने से चाँद इधर-उधर हो जाता और उसके हाथ में नहीं आता।

तभी उसे एक तरकीब सूझी। उसने सोचा कि क्यों न मैं चाँद को ऊपर आकाश की ओर उछाल दूँ। पानी उछालते-उछालते उसकी नज़र आकाश में गई। वहाँ चाँद को देखकर वह खुशी से उछल पड़ा और बोला–

"देखो, मैंने चाँद को आकाश में पहुँचा दिया।

सब खुशी से आकाश में देखने लगे और ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ बजाने लगे। इतने में अचानक सभी बंदरों के हाथ छूट गए और वे सब कुएँ में गिर गए।

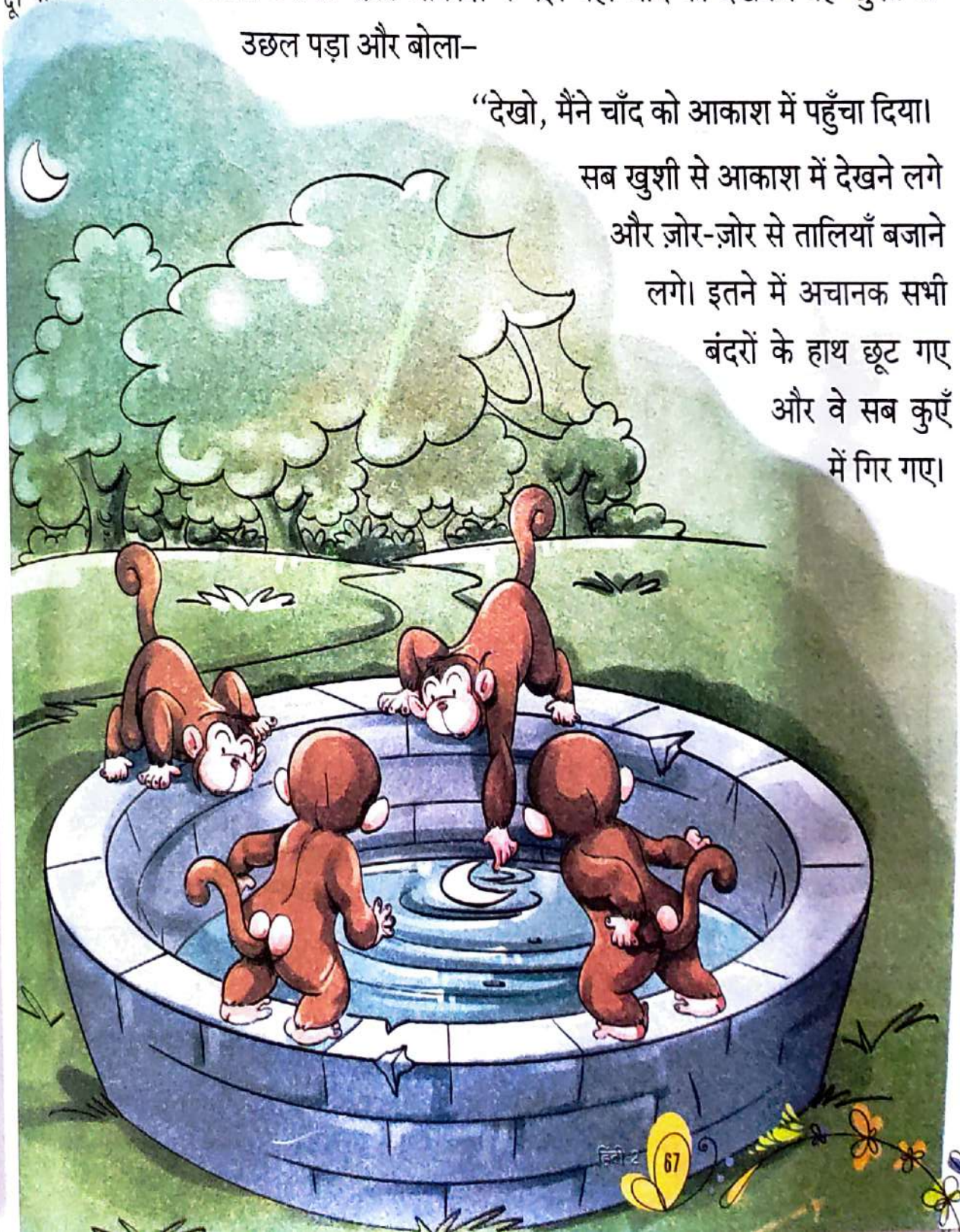

9 स्वस्थ जीवन

आप सुबह-सुबह उठकर इनमें से कौन-से कार्य करते हैं बताइए–

अध्यापन संकेत

- बच्चों से स्वास्थ्य की चर्चा करते हुए उनसे पूछें कि वह स्वस्थ रहने के लिए क्या-क्या करते हैं।

• प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ रहना चाहता है। इसके लिए किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है आओ जानें—

हमारा शरीर एक मशीन की भाँति है। इससे हम अनेक क्रियाएँ कर सकते हैं जैसे– देखना, चलना, सूँघना, चबाना, सुनना, दौड़ना, याद रखना, नाचना, बोलना आदि।

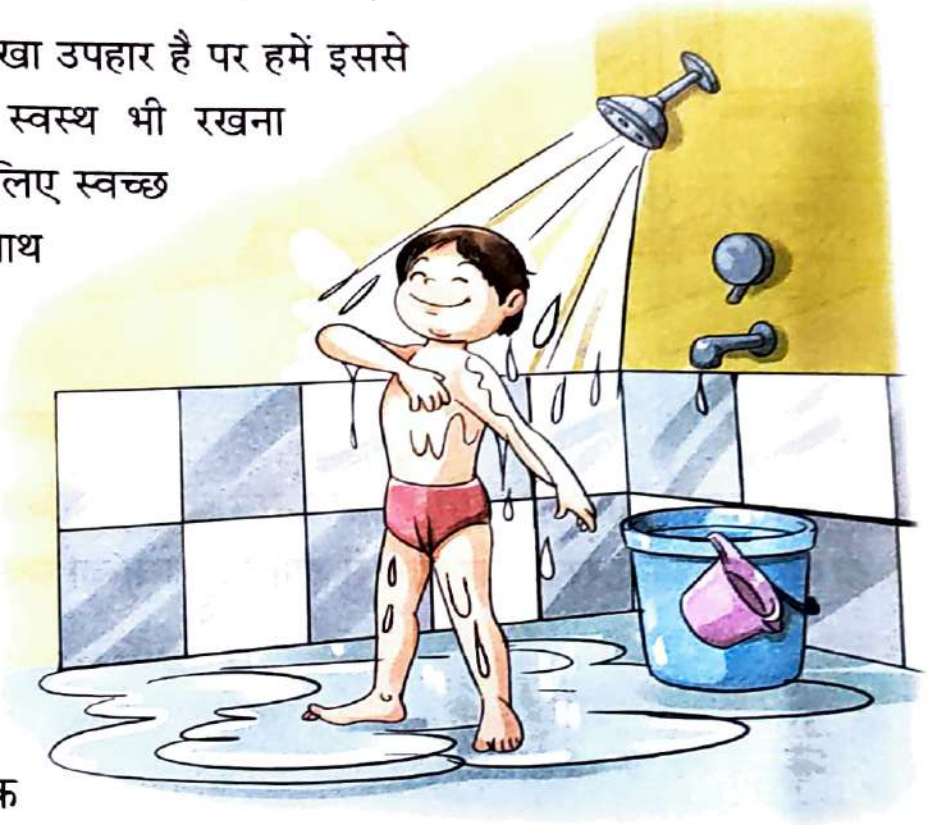

यह शरीर हमें प्रकृति से मिला अनोखा उपहार है पर हमें इससे काम लेने के साथ-साथ इसको स्वस्थ भी रखना चाहिए। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए स्वच्छ हवा, भोजन, पानी के साथ-साथ व्यायाम भी आवश्यक है। यदि इसकी उचित देखभाल न की जाए तो हम बीमार पड़ सकते हैं।

सबसे आवश्यक है स्वच्छ रहना। अत: प्रतिदिन स्नान करके साफ कपड़े पहनने चाहिए। अपने नाखून, बाल, दाँत आदि सभी भली प्रकार साफ रखने आवश्यक हैं। गंदे शरीर से दुर्गंध आती है और कीटाणु चिपककर बीमारी उत्पन्न कर देते हैं। इसलिए प्रत्येक अंग को नियमित रूप से साफ करना चाहिए। साफ वस्त्र पहनने चाहिए। इन्हें रोज बदलना आवश्यक है अन्यथा वस्त्रों में चिपकी धूल व कीटाणु हमें बीमार भी कर सकते हैं।

मुख से जब हम भोजन करते हैं तो भोजन के कण दाँतों से चिपके रह जाते हैं। उन्हें ब्रश से भली-भाँति साफ करना आवश्यक है अन्यथा वे सड़कर दाँतों में छेद बना देते हैं जिससे दाँतों में भयंकर दर्द हो सकता है। इसी प्रकार आँखों पर भी ठंडे पानी के छींटे देने चाहिए और उन्हें साफ रूमाल से पोंछना चाहिए। गंदे हुए नाखूनों को भी काटना चाहिए ताकि उनमें मैल आदि न भरे। इसके पश्चात हमें भोजन पर ध्यान देना चाहिए। साफ-सुथरा भोजन भी स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है। बासी व गंदा खाना भी हमें बीमार बना सकता है।

व्यायाम भी स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है। इसके लिए पी०टी०, योग, दौड़, खेल आदि का नियमित कार्यक्रम रखना चाहिए। यदि हम एक ही स्थान पर बैठे-बैठे टी०वी० आदि देखते रहें तो धीरे-धीरे आलस और मोटापा हमें रोगी बना देंगे। अतः व्यायाम भी हमारे लिए बहुत उपयोगी है।

जब कभी हम बीमार हो जाते हैं या किसी बीमार व्यक्ति को देखते हैं तो हमें दुख होता है। थोड़ी सी सावधानी रखने पर बीमारी आदि से बचा जा सकता है।

शब्द-अर्थ

क्रियाएँ– काम; प्रकृति– कुदरत; दुर्गंध– बदबू; अन्यथा– नहीं तो; पश्चात्– बाद में; नियमित– नियम से, रोज; उपयोगी– लाभदायक।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) हमारा शरीर है एक–

(i) मशीन की भाँति ( ) (ii) मूर्ति की भाँति ( )

(ख) शरीर से हम क्रियाएँ कर सकते हैं–

(i) एक ( ) (ii) अनेक ( )

(ग) प्रकृति ने हमें शरीर दिया है एक–

(i) उपहार के रूप में ( ) (ii) प्रार्थना के बाद ( )

(घ) गंदे शरीर से आती है–

(i) सुगंध ( ) (ii) दुर्गंध ( )

2. रिक्त स्थानों में उचित शब्द भरो–

(क) शरीर से हम अनेक ..... कर सकते हैं। (क्रियाएँ/भाषाएँ)

(ख) कीटाणु ..... उत्पन्न करते हैं। (संगीत/बीमारी)

(ग) स्वस्थ रहने के लिए ..... आवश्यक है। (व्यायाम/दौड़)

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) शरीर से हम कौन-कौन सी क्रियाएँ कर सकते हैं?

.....

.....

(ख) शरीर को स्वस्थ रखने के लिए क्या आवश्यक है?

.....

.....

(ग) दाँत किससे साफ करने चाहिए?

.....

.....

(घ) व्यायाम करने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है?

.....

.....

1. पढ़ो और समझो–

(क) व्यायाम, कसरत, वर्जिश।

(ख) स्वस्थ, तंदुरुस्त, सेहतमंद।

(ग) बीमार, रोगी, अस्वस्थ।

(घ) उपयोगी, लाभप्रद, फायदेमंद।

2. ई की मात्रा 'ी' लगाकर नए शब्द बनाओ–

(क) दुख – .....दुखी.....

(ख) कुल – .....

(ग) सुख – .....

(घ) कल – .....

(ङ) धन – .....

(च) चल – .....

(छ) वजन – .....

(ज) हँस – .....

3. वाक्य में प्रयोग करो–

(क) सावधानी – .....

.....

(ख) मोटापा – .....

.....

(ग) आलस – .....

.....

(घ) स्वच्छता – .....

.....

कुछ करने के लिए

- योग में प्राणायाम का क्या महत्व है? इसके बारे में पता लगाओ—

- कुछ शारीरिक श्रम वाले खेलों के नाम लिखो—

....

....

- इन चीजों की उस कंपनी का नाम लिखो, जिसका उपयोग आप करते हैं; जैसे—

टूथपेस्ट ..... कोलगेट (या कोई अन्य) .....

साबुन .....

शैंपू .....

तेल .....

मौसम-मौसम

(चित्र वर्णन)

चित्र देखकर रिक्त स्थानों में मौसम का नाम भरिए–

यह है ..... का मौसम।

यह है ..... का मौसम।

यह लो ..... आ गई।

यह है ..... का मौसम।

रिक्त स्थान भरो–

1. मुझे ..... का मौसम पसंद है। (सर्दी/गर्मी/बरसात)
2. इस मौसम में ..... कपड़े पहनते हैं। (ऊनी/सूती)
3. इस मौसम में ..... चीजें खाना अच्छा लगता है। (ठंडी/गरम)
4. इस मौसम में ..... का त्योहार आता है। (राखी/होली/दीवाली)
5. इस मौसम में हम ..... में बैठते हैं। (धूप/छाँव)

10 कौन सिखाता?

क्या आप पक्षियों को अपना साथी या मित्र मानते है?

अध्यापन संकेत

- पाठ में दी गई कविता का सस्वर वाचन करते हुए बच्चों से विविध पक्षियों के बारे में बात करें।

• मनुष्य हर काम सीखता है पर पशु-पक्षियों को भी हर काम आता है। आओ, पढ़ें कैसे।

(कविता)

कौन सिखाता है चिड़ियों को चीं-चीं चीं-चीं करना?
कौन सिखाता फुदक-फुदककर उनको चलना-फिरना?

कौन सिखाता फुर से उड़ना दाने चुग-चुग खाना?
कौन सिखाता तिनके ला-लाकर घोंसले बनाना?

कौन सिखाता है बच्चों का लालन-पालन करना उनको?
माँ का प्यार, दुलार, चौकसी कौन सिखाता उनको?

कुदरत का यह खेल, वही हम सबको, सब कुछ देती,
किंतु नहीं बदले में हमसे वह कुछ भी है लेती।

हम सब उसके अंश कि जैसे तरु-पशु-पक्षी सारे
हम सब उसके वंशज जैसे सूरज-चाँद सितारे।

—द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

शब्द-अर्थ

दुलार करना– प्यार करना; चौकसी करना– ध्यान रखना; कुदरत– प्रकृति; अंश– भाग, हिस्सा; तरु– पेड़; वंशज– वंश में उत्पन्न।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) चिड़िया बोलती है–

(i) पी-पी के स्वर में ( ) (ii) चीं-चीं के स्वर में ( )

(ख) चिड़िया दाने–

(i) चुगती है ( ) (ii) उगाती है ( )

(ग) चिड़िया घोंसला बनाती है–

(i) सलाइयों से ( ) (ii) तिनकों से ( )

(घ) चिड़िया के कामों को कहा गया है–

(i) कुदरत का खेल ( ) (ii) सिखाया हुआ पाठ ( )

2. कविता पढ़कर पंक्तियाँ पूरी करो–

(क) कौन सिखाता है बच्चों का .....

..... कौन सिखाता उनको ?

(ख) हम सब उसके अंश .....

..... सूरज-चाँद सितारे।

3. सत्य कथन पर ✓ तथा असत्य कथन पर ✗ लगाओ–

(क) चिड़िया फुदक-फुदककर चलती है। ( )

(ख) चिड़िया बिल में रहती है। ( )

(ग) चिड़िया अपने बच्चों का लालन-पालन करती है। ( )

(घ) चिड़िया अपने बच्चों से प्यार नहीं करती। ( )

1. सुमेल करो–

(अ)	(ब)
(क) लालन	(i) दुलार
(ख) हँसी	(ii) फिरना
(ग) प्यार	(iii) पालन
(घ) चलना	(iv) खुशी

2. इस कविता में चिड़िया के गुण बताए गए हैं। नीचे दिए शब्दों में से गुण-दोष अलग-अलग करो–

मेहनती, आलसी, क्रोधी, क्षमाशील, फुर्तीली, बुद्धिमान, मूर्ख।

गुण	दोष

(जानो– गुण या विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।)

3. बहुवचन लिखो–

(क) चिड़िया – .....चिड़ियाँ..... (ख) उँगली – .....

(ग) बकरी – ..... (घ) तितली – .....

(ङ) अँगूठी – ..... (च) घोंसला – .....

कुछ करने के लिए

- बिंदु मिलाकर चिड़िया का चित्र पूरा करो।

- अपनी पसंद के पक्षी के बारे में कुछ लिखो–

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

जी होता चिड़िया बन जाऊँ

(कविता) पठन हेतु

जी होता, चिड़िया बन जाऊँ
मैं नभ में उड़कर सुख पाऊँ।

मैं फुदक-फुदककर डाली पर,
डोलूँ तरु की हरियाली पर,

फिर कुतर-कुतरकर फल खाऊँ,
जी होता, चिड़िया बन जाऊँ।

जंगल-जंगल में उड़ विचरूँ,
पर्वत, घाटी की सैर करूँ,

सब जग को देखूँ इठलाऊँ,
जी होता, चिड़िया बन जाऊँ।

कितना स्वतंत्र इनका जीवन!
इनको न कहीं कोई बंधन।

मैं भी इनका जीवन पाऊँ,
जी होता, चिड़िया बन जाऊँ।

— सोहनलाल द्विवेदी

जी होता चिड़िया बन जाऊँ

(कविता) पठन हेतु

जी होता, चिड़िया बन जाऊँ
मैं नभ में उड़कर सुख पाऊँ।

मैं फुदक-फुदककर डाली पर,
डोलूँ तरु की हरियाली पर,

फिर कुतर-कुतरकर फल खाऊँ,
जी होता, चिड़िया बन जाऊँ।

जंगल-जंगल में उड़ विचरूँ,
पर्वत, घाटी की सैर करूँ,

सब जग को देखूँ इठलाऊँ,
जी होता, चिड़िया बन जाऊँ।

कितना स्वतंत्र इनका जीवन!
इनको न कहीं कोई बंधन।

मैं भी इनका जीवन पाऊँ,
जी होता, चिड़िया बन जाऊँ।

—सोहनलाल द्विवेदी

11 मैं तारा हूँ ...

तारों को देखकर आपको कैसा लगता है? जरा बताओ।

अध्यापन संकेत

- बच्चों से प्रकृति की अद्भुत रचनाओं के बारे में चर्चा करें और इसके रहस्य व आकर्षण की ओर ध्यान खींचें।

• टिमटिम करते तारे, झिलमिल करते तारे आपने आसमान में देखें होगें। आओ पढ़ें, ये तारा अपने बारे में क्या कह रहा है।

(आत्मकथा)

मैं तारा हूँ। आकाश में रात को तुमने मुझे देखा तो होगा। मैं कितना सुंदर और चमकीला दिखाई देता हूँ। मेरे जैसे और भी अनेक तारे आसमान में हैं। गर्मियों में पहले जब लोग खुले आसमान के नीचे ठंडी हवा में सोते थे, तब वे रात में मुझे चमकता देखकर अति प्रसन्न होते थे। अब तो लोग प्राय: घर के अंदर ही एयरकंडीशनर आदि में सोते हैं। पर मुझे और मेरे साथियों को आकाश में देखते हुए सोना एक अलग ही अनुभव है। चाँद के साथ-साथ मेरा भी बहुत महत्व है। मेरे नाम पर अनेक कविताएँ भी लिखी गई हैं।

मेरी चमक और झिलमिल करती रोशनी सभी को बड़ी अच्छी लगती है। जब कोई बच्चा अपनी माँ को बहुत प्यारा लगता है तो वह उसे 'मेरा चंदा मेरा तारा, मेरा दुलारा' कहकर खुशी प्रकट करती हैं।

प्यार पाना किसे अच्छा नहीं लगता? मुझे भी आप सबका बहुत सा प्यार मिलता है। मुझे अपना जीवन सुंदर लगता है। पर मेरी असलियत यह है कि ..... मैं छोटा नहीं हूँ वरन् बहुत बड़ा हूँ, दूरी के कारण छोटा दिखाई देता हूँ। खैर, मेरी शक्ल-सूरत और डील-डौल के बारे में आप विज्ञान की किताबों में बड़ी कक्षाओं में पढ़ेगें।

काश! मैं धरती पर आपसे मिलने आ सकता। मेरी नकल लोग अपने महँगे वस्त्रों पर सितारे लगाकर करते हैं। राजा-रानी भी अपने वस्त्रों पर सितारे जड़वाते हैं। शादी-विवाह पर भी स्त्रियाँ अपनी साड़ियों आदि पर जगह-जगह सितारों आदि का काम करवाकर उन्हें सुंदर बनाती हैं। ये सब मेरे ही रूप को देखकर किया जाता है।

आँखों के अंदर जो गोला सा दिखाई देता है, उसकी चमक की तुलना भी तारा कहकर की जाती है। 'आँखों का तारा होना' भी एक मुहावरा है।

आज भी लोग मेरी नकल करते हुए झिलमिलाते आभूषण बनवाते हैं और तरह-तरह की सजावटें की जाती हैं। दीवाली और क्रिसमस पर चमकीले कागज से बने बड़े-बड़े सितारे दुकानों पर लटकते दिखाई दे जाते हैं। लोग उन्हें खरीदकर लाते हैं और जन्मदिन आदि पर उनसे अपना घर और पेड़-पौधे आदि सजाते हैं। मैं अपना इतना मान-सम्मान और प्यार पाकर गद्‌गद हो जाता हूँ। है न मेरा जीवन सुंदर!

अच्छा बाकी बातें
फिर कभी–
आपका अपना तारा

शब्द–अर्थ

अति– बहुत; असलियत– सच्चाई; रूप– सुंदरता; आभूषण– गहने; गद्‌गद– बहुत खुश।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) तारे हमें दिखाई देते हैं–

(i) दिन में ( ) (ii) रात में ( )

(ख) पहले लोग गर्मियों के मौसम में प्राय: सोते थे–

(i) खुले में ( ) (ii) कमरों में ( )

(ग) 'आँखों का तारा होना'–

(i) एक मुहावरा है ( ) (ii) एक सपना है ( )

(घ) तारे को अपना जीवन लगता है–

(i) बेकार ( ) (ii) सुंदर ( )

2. सत्य कथन के सामने ✓ तथा असत्य कथन के सामने ✗ लगाओ–

(क) तारा चमकीला दिखाई देता है। ( )

(ख) तारे किसी को पसंद नहीं। ( )

(ग) राजा-रानी के वस्त्रों में सितारे जड़े होते हैं। ( )

(घ) प्यार पाकर तारा गद्‌गद अनुभव करता है। ( )

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) आजकल लोग गर्मियों में प्राय: कहाँ सोते हैं?

.....

.....

(ख) तारे की क्या विशेषता लोगों को अच्छी लगती है?

.....

.....

(ग) माँ अपने प्यारे बच्चे को प्राय: क्या कहकर दुलार करती है?

.....

.....

(घ) तारे के बारे में हम अधिक जानकारी किस विषय को पढ़कर ले सकते हैं?

.....

.....

भाषा की बात

1. समझकर लिखो–

(क) तारा – .....तारे..... (ख) साड़ी – .....

(ग) फव्वारा – ..... (घ) गोला – .....

(ङ) झरना – ..... (च) ठेला – .....

2. सुमेल करो–

(अ)	(ब)
(क) आकाश	(i) सूरज
(ख) सूर्य	(ii) चाँद
(ग) पंछी	(iii) दरवाजा
(घ) द्वार	(iv) पक्षी
(ङ) चंद्र	(v) आसमान

3. सही शब्द के आगे ✓ लगाओ–

(क) पयारा	( )	प्यारा	( )
(ख) वस्त्र	( )	वस्तर	( )
(ग) साड़ी	( )	साड़ि	( )
(घ) आनख	( )	आँख	( )

रचनात्मक चिंतन

कुछ करने के लिए

- बिंदुओं को जोड़कर एक बड़ा सितारा बनाओ और उस पर चमकीला कागज चिपकाओ–

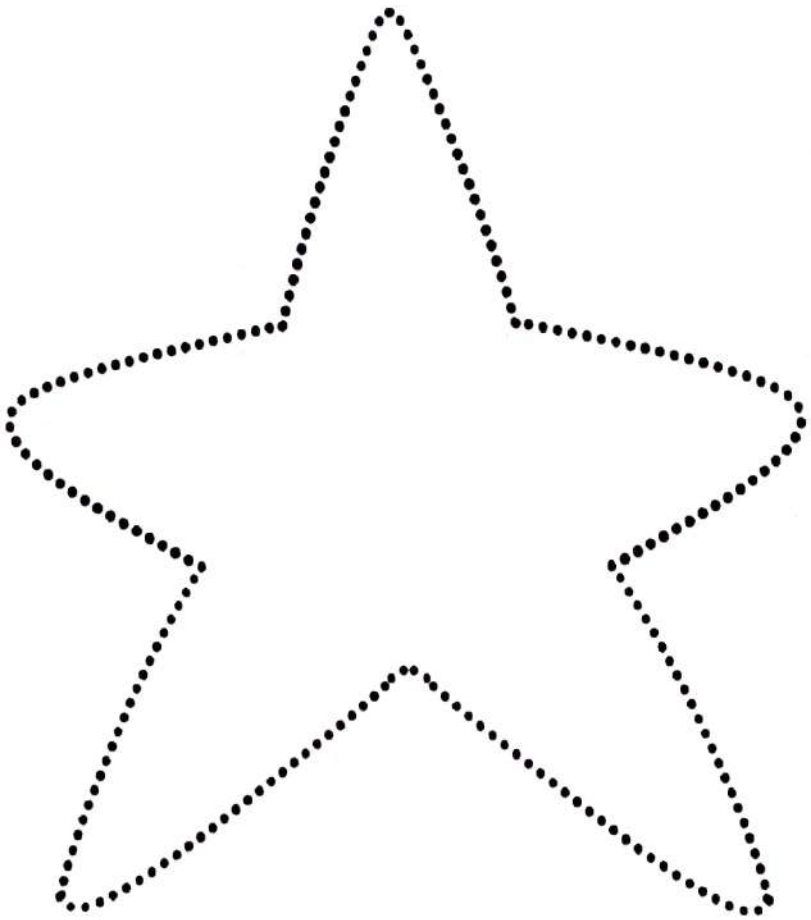

तारे

(कविता)

माँ जब सूरज ढल जाता है
अँधियारा छा जाता है।
आसमान में जगमग, जगमग
दीवे कौन जलाता है?

रात बीतने पर सपनों की
जो सूरज चमकाता है,
जो सोने-चाँदी की किरणें
धरती पर फैलाता है।

वह जब सूरज ढल जाता है
अँधियारा छा जाता है,
आसमान में जगमग, जगमग
लाखों दीप जलाता है।

—हरिवंशराय बच्चन

12 मेरा देश...

(स्थान परिचय)

मैं भारत में पैदा हुआ हूँ अत: यह मेरा देश है। यहाँ ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं, घने जंगल हैं, अनेक नदियाँ हैं, अनेक मौसम हैं।

प्राय: यहाँ गरमी अधिक होती है जिससे लोग सूती वस्त्र पहनना अधिक पसंद करते हैं।

खाने के लिए इस मौसम में खरबूजा, लीची, तरबूज, आम आदि खूब मिलते हैं। लोग दोपहर को घर से बाहर निकलने में कतराते हैं।

यहाँ बरसातें भी छमाछम होती हैं। बच्चों को बरसात में नहाना बहुत अच्छा लगता है। वे पानी से खेलकर खूब आनंद लेते हैं। इसी प्रकार यहाँ जाड़े के मौसम में भी काफी ठंड पड़ती है। लोग रजाइयों में दुबके रहते हैं और आग तापते हैं। यहाँ के जंगलों में अनेक पशु-पक्षी पाए जाते हैं जैसे शेर, हाथी, हिरन, मोर आदि।

यहाँ अनेक मंदिर, गुरुद्वारे, गिरजाघर और मस्जिदें हैं। लोग प्राय: पूजा-पाठ करते हैं। पशु-पक्षियों को भी भोजन व दाना-पानी खिलाते हैं। भारत में अनेक त्योहार भी बड़ी धूमधाम से मनाए जाते हैं; जैसे दशहरा, दीवाली, ईद, होली, क्रिसमस आदि। यहाँ अनेक नदियाँ हैं, जिनमें गंगा नदी को पवित्र माना जाता है। लोग इसमें स्नान आदि करते हैं। यहाँ स्नान करना पुण्य माना जाता है।

भारत में महात्मा बुद्ध, विवेकानंद, महर्षि दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी जी जैसे महान पुरुषों ने जन्म लिया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की वीरता भी बहुत प्रसिद्ध है।

यहाँ ताजमहल, कुतुबमीनार जैसी इमारतें और कश्मीर जैसी फूलों सी लदी घाटियाँ भी हैं। यहाँ देखने-जानने के लिए बहुत कुछ है।

शब्द-अर्थ

मौसम– ऋतुएँ; आनंद– मज़ा; त्योहार– पर्व; पवित्र– पावन।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. **सही उत्तर पर ✓ लगाओ–**

(क) हमारे देश का नाम है–

(i) भारती ( ) (ii) भारत ( )

(ख) भारत में मौसम हैं–

(i) अनेक ( ) (ii) एक ( )

(ग) बच्चों को बरसात में अच्छा लगता है–

(i) नहाना ( ) (ii) पूजा करना ( )

(घ) सर्दियों में लोग दुबके रहते हैं–

(i) रजाइयों में ( ) (ii) झाड़ियों में ( )

2. रिक्त स्थानों में उचित शब्द भरो–

(क) भारत में लोग प्रायः ..... करते हैं। (अंधविश्वास/पूजा-पाठ)

(ख) भारत में अनेक ..... मनाए जाते हैं। (जन्मदिन/त्योहार)

(ग) गंगा में स्नान करना ..... माना जाता है। (पुण्य/वीरता)

(घ) रानी लक्ष्मीबाई की ..... प्रसिद्ध है। (सुंदरता/वीरता)

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) भारत में कौन सी ऋतु या मौसम अधिक होता है?

.....

.....

(ख) भारत में कौन-कौन से त्योहार मनाए जाते हैं?

.....

.....

(ग) भारत के कुछ महान पुरुषों के नाम लिखो।

.....

.....

(घ) भारत की कोई दो प्रसिद्ध इमारतों के नाम लिखो।

.....

.....

भाषा की बात

1. **पढ़ो और समझो–**

(क) भारत, हिंदुस्तान, इंडिया।

(ख) प्रसिद्ध, मशहूर, विख्यात।

(ग) पूजा, उपासना, आराधना।

(घ) ठंड, शीत, जाड़ा।

2. **निम्नलिखित शब्दों को उनके उलटे (विलोम) अर्थ वाले शब्दों से मिलाओ–**

(अ)	(ब)
(क) गर्मी	(i) तुच्छ
(ख) महान	(ii) आग
(ग) देश	(iii) कायरता
(घ) वीरता	(iv) विदेश
(ङ) पानी	(v) सर्दी

3. **निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध करो–**

(क) सुनदरता – ....सुंदरता.......

(ख) पूरुश – ....

(ग) सनान – ....

(घ) जनगल – ....

(ङ) पशू – ....

कुछ करने के लिए

- भारत का एक बड़ा मानचित्र बनाओ।

- भारत देश कब और क्यों अंग्रेजों का गुलाम बना? पता लगाओ और कक्षा में बताओ।
- देशभक्ति की कोई कविता सुनाओ।

13 कछुआ और खरगोश

इस कहानी को पढ़कर कक्षा में सुनाओ।

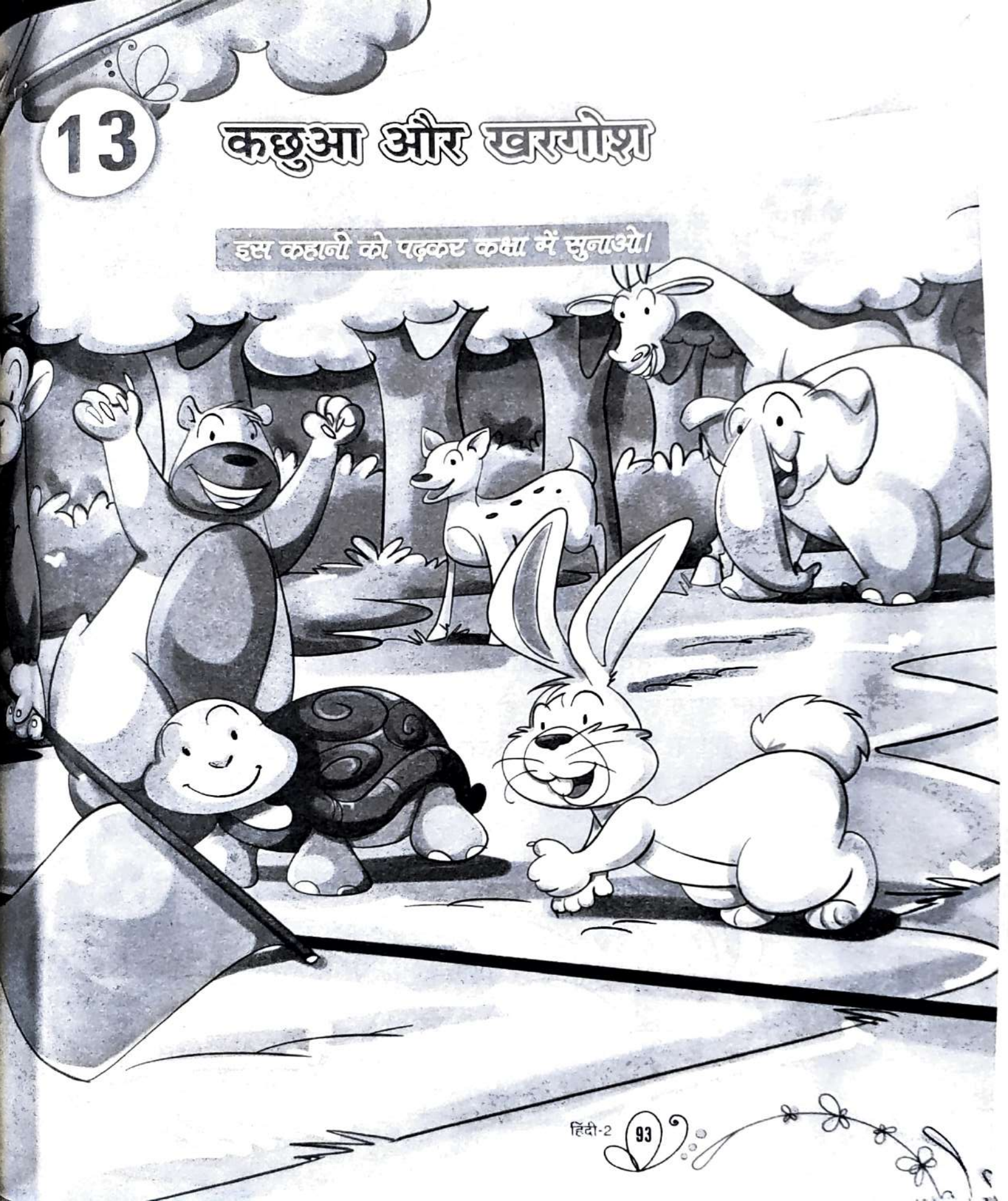

(कहानी) पढ़ने हेतु

बहुत समय पहले की बात है, एक जंगल था। उसमें एक खरगोश रहता था। वह बहुत तेज़ दौड़ता था। परंतु उसे अपनी चाल पर बहुत घमंड था। एक दिन की बात है, नदी किनारे उसे एक कछुआ मिला। वह कछुआ बहुत धीरे-धीरे चल रहा था। उसे देखकर खरगोश हँस पड़ा और बोला– "तुम तो बहुत तेज़ चलते हो, कछुए भाई।"

यह सुनकर कछुए ने पहले तो उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। लेकिन फिर से उसके दुबारा छेड़े जाने पर उसने खरगोश को समझाते हुए कहा– "तुम्हें अपनी तेज़ चाल पर घमंड नहीं करना चाहिए।"

परंतु खरगोश ने फिर अकड़कर कहा– "मैं घमंड क्यों न करूँ? इस जंगल में मुझसे तेज़ चलकर तो कोई जानवर दिखाए। मैं इस जंगल में सबसे तेज़ दौड़ सकता हूँ, मुझ से आगे कोई नहीं निकल सकता।"

कछुए ने कहा– "अच्छा, अगर यह बात है तो तुम मुझसे जीत कर दिखाओ तो मैं मानूँ! यदि मैं हार गया तो मैं यह जंगल छोड़कर चला जाऊँगा और यदि तुम हार गए तो तुम यह जंगल छोड़कर चले जाना।"

खरगोश ने यह चुनौती स्वीकार कर ली। उनकी दौड़ करवाने के लिए लोमड़ी पंच बनी। अगला दिन दौड़ के लिए तय किया गया।

चुनौती के अनुसार खरगोश और कछुए को दूर दिखाई दे रही पहाड़ी पर खड़े एक वृक्ष तक दौड़ लगानी थी। "जो वहाँ पर पहुँचेगा उसी की जीत होगी" लोमड़ी ने कहा। फिर उसके बाद उसने झंडी दिखाकर दौड़ शुरू कराई। जंगल के कई अन्य पशु-पक्षी भी इस दौड़ को देखने आए थे।

खरगोश लंबी-लंबी छलाँगें लगाता हुआ शीघ्र ही पेड़ के निकट पहुँच गया। परंतु रास्ते में उगी हरी-भरी घास को देखकर उसके मुँह में पानी आ गया। वह दौड़ते-दौड़ते बहुत थक भी गया था। घास खाकर उसे सुस्ती आने लगी और वह विश्राम करने के लिए वही झाड़ी के पास लेट गया। देखते ही देखते उसकी आँख लग गयी और वह गहरी नींद में सो गया।

परंतु दूसरी ओर, कछुआ लगातार चलता ही रहा। धीरे-धीरे, चलते-चलते वह पहाड़ी के पास पहुँच गया। इस तरह वह सोते हुए खरगोश से भी आगे निकल गया और उस वृक्ष के पास पहुँच गया, जहाँ लोमड़ी व जंगल के पशु-पक्षी पहले ही उपस्थित थे।

वृक्ष के पास पहुँचते ही लोमड़ी ने कछुए को विजेता घोषित कर दिया। यह देखकर वहाँ उपस्थित सभी पशु-पक्षी खुशी से नाचने लगे और कछुए को उसकी जीत के लिए बधाई देने लगे।

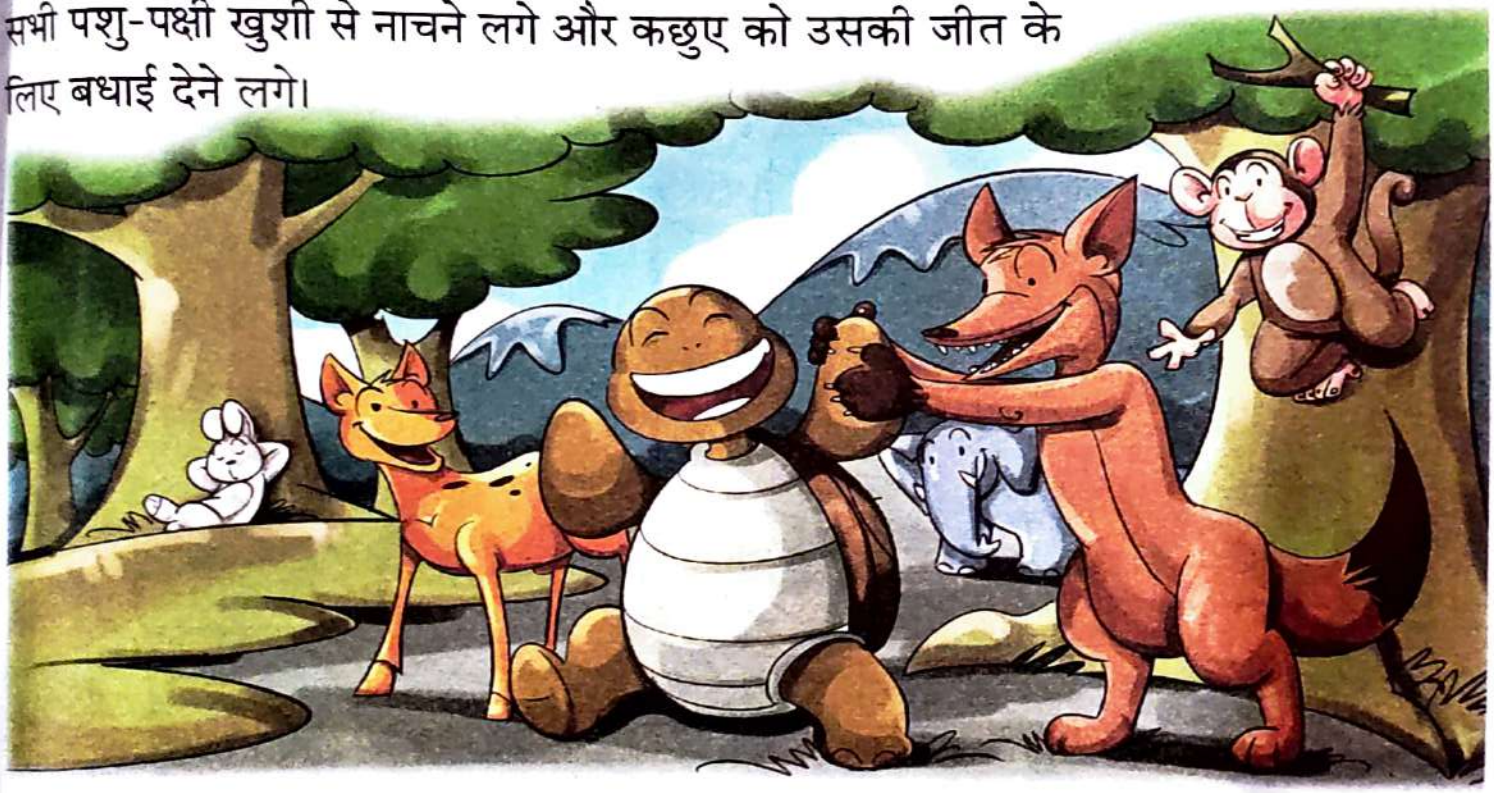

उधर अपनी नींद खुलने पर खरगोश भागा-भागा वहाँ आया और कछुए को वहाँ पहले से ही उपस्थित देखकर बहुत लज्जित हुआ। उसका सारा घमंड चूर-चूर हो चुका था। इस घटना के कुछ दिन बाद ही उसे जंगल छोड़कर जाना पड़ा। अब वहाँ पर कछुए का मज़ाक कोई नहीं उड़ाता था।

14 क्रिसमस

क्या आप जानते हैं कि ऐसा कब किया जाता है?

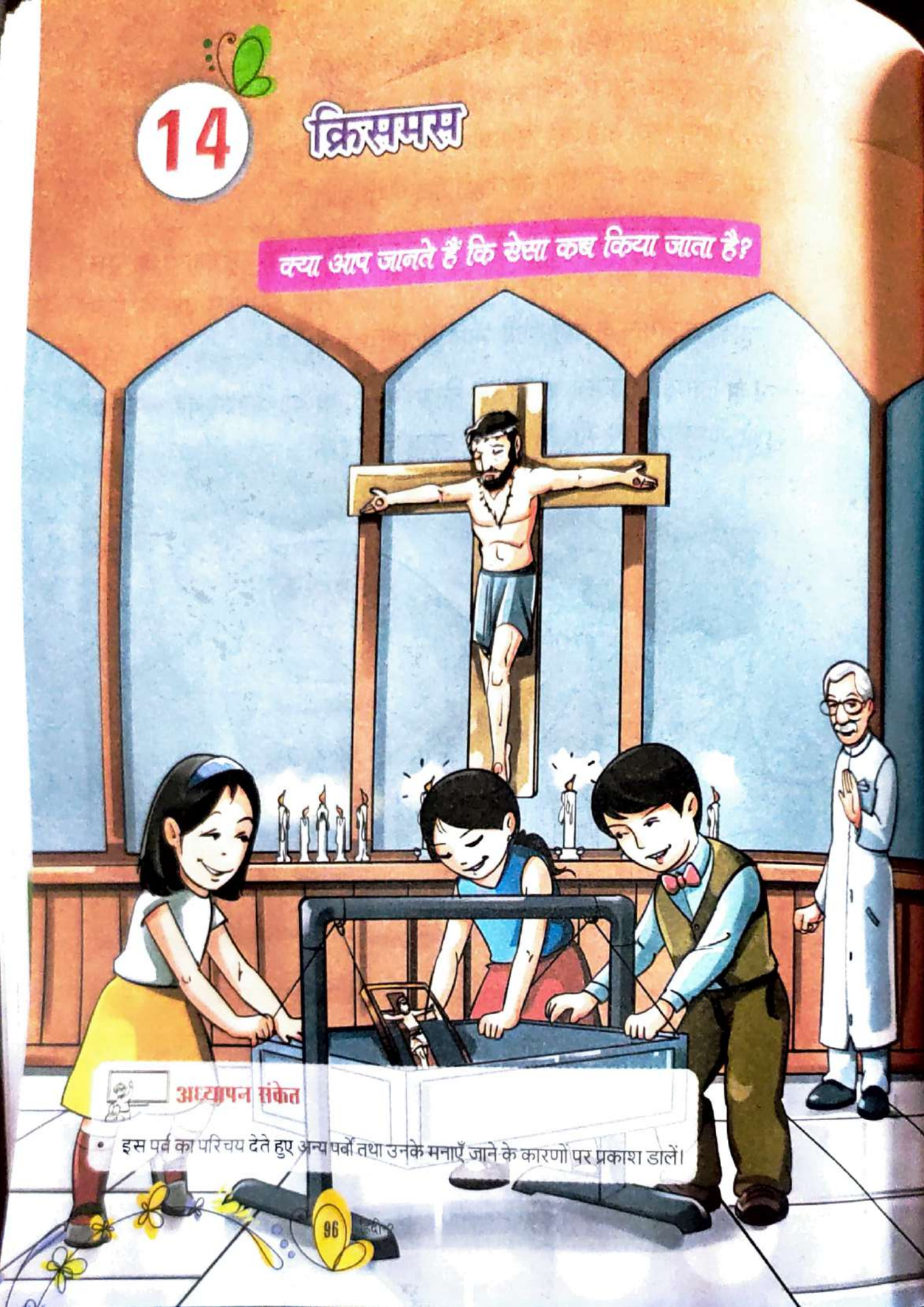

अध्यापन संकेत

- इस पर्व का परिचय देते हुए अन्य पर्वों तथा उनके मनाएँ जाने के कारणों पर प्रकाश डालें।

आपने क्रिसमस के त्योहार के बारे में सुना होगा। आइए, पढ़े वे इस दिन को कैसे मनाते हैं?

25 दिसंबर को ईसाई बड़ा दिन कहते हैं। इसे अंग्रेजी में 'क्रिसमस डे' कहा जाता है। इस दिन प्रभु ईसा मसीह का जन्म हुआ था। जिस प्रकार हमारे देश में दीपावली और दशहरे के त्योहार महत्वपूर्ण हैं, इसी प्रकार यूरोप में 'क्रिसमस डे' महत्वपूर्ण पर्व है। ईसाई लोग इस पर्व को बड़ी धूमधाम से मनाते हैं।

25 दिसंबर को प्रभु ईसा का जन्म हुआ था, ऐसा माना जाता है, परंतु कुछ इतिहासकार कहते हैं कि ईसा के जन्म की तिथि निश्चित नहीं है। वास्तव में, जर्मनी आदि देशों में बहुत पुराने समय से यह दिन शीतकाल के मुख्य त्योहार के रूप में मनाया जाता था। जब यूरोप के लोग ईसाई बन गए तो वे ईसा के जन्म की खुशी इसी दिन मनाने लगे। तभी से प्रसिद्ध हो गया कि प्रभु ईसा का जन्म 25 दिसंबर को हुआ था।

यह पर्व अनेक प्रकार से मनाया जाता है। इंग्लैंड और अमेरिका में बच्चे अपने मोजे अपने पलंग के पास टाँग देते थे और रात को सो जाते थे। इस विषय में एक किंवदंती प्रचलित है, "रात को सेंटाक्लाज (संत निकलसन) आते हैं और वे बच्चों के मोजों में खिलौने भर जाते हैं, जो बच्चे जागते रहते हैं, उनके मोजों में सेंटाक्लाज खिलौने नहीं भरते। खिलौनों के लोभ में बच्चे रात को सो जाते हैं और जब सवेरे उठते हैं तो वे अपने-अपने मोजे देखते हैं। उनमें खिलौने पाकर वे बहुत प्रसन्न होते हैं। खिलौने उनके माता-पिता ही भर देते हैं, सेंटाक्लाज नहीं। परंतु सेंटाक्लाज उन पर प्रसन्न है, यह जानकर बच्चों को बहुत प्रसन्नता होती है।

जर्मनी में यह प्रसिद्ध है कि प्रभु ईसा स्वयं ही रात को घर में खिलौने रख जाते हैं। प्रातः काल बच्चे उठकर घरों में इधर-उधर खिलौने ढूँढते हैं। खिलौने पाकर वे बहुत प्रसन्न होते हैं और ईसा का गुणगान करते हैं। फ्रांस में प्रसिद्ध है कि प्रभु ईसा लकड़ी के डिब्बों में खिलौने भरकर छोड़ जाते हैं। इस प्रकार, इस त्योहार पर भिन्न-भिन्न प्रकार से बच्चों को उपहार देने का रिवाज है। 25 दिसंबर की रात को पटाखे और आतिशबाजियाँ छोड़ी जाती हैं। गिरजाघरों में ईसा का जन्म धूमधाम से मनाया जाता है। बालक ईसा के चित्र को झूले पर झुलाते हैं।

25 दिसंबर से 31 दिसंबर तक सप्ताह-भर खुशियाँ मनाई जाती हैं। बालक-बालिकाएँ और युवक-युवतियाँ सभी नाच-गाना और मनोरंजन करते हैं। इस प्रकार 25 दिसंबर के उपलक्ष में लोग आपस में बधाई पत्र भेजते हैं व मंगल कामना करते हैं। इस प्रकार यह समय आनंदपूर्वक बीतता है।

शब्द-अर्थ

पर्व–त्योहार; धूमधाम–जोर-शोर से; प्रसन्नता–खुशी; शीतकाल–सर्दी का मौसम; उपहार–भेंट; प्रसिद्ध–विख्यात; परस्पर–आपस में; परंतु–लेकिन; स्वयं–अपने आप।

अभ्यास

(अभ्यास NEP 2020 पर आधारित)

आलोचनात्मक चिंतन

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) 25 दिसंबर कहलाता है–

(i) बड़ा दिन ( ) (ii) लंबा दिन ( )

(ख) रात को बच्चे अपने पास टाँग देते थे–

(i) थैले ( ) (ii) मोजे ( )

(ग) क्रिसमस है–

(i) एक पर्व ( ) (ii) एक कानून ( )

(घ) क्रिसमस पर जलाते हैं–

(i) पटाखे ( ) (ii) आग ( )

2. **सुमेल करो–**

(अ)	(ब)
(क) क्रिसमस का	(i) खिलौने
(ख) बच्चों के लिए	(ii) झुलाना
(ग) झूला	(iii) त्योहार
(घ) खुशियाँ	(iv) भेजना
(ङ) बधाई पत्र	(v) मनाना

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–**

(क) क्रिसमस कब मनाते हैं?

.....

.....

(ख) इस दिन किसका जन्म हुआ था?

.....

.....

(ग) क्रिसमस की रात उपहार कौन रख जाता है?

.....

.....

(घ) क्रिसमस पर किसके चित्र को झूला झुलाया जाता है?

.....

.....

भाषा की बात

1. **बेमेल शब्द काटो–**

(क) दीवाली, होली, मंदिर, दशहरा।

(ख) नाचना, गाना, हँसना, रोना।

(ग) खील, बताशा, रंग, दीपक।

(घ) फूल, काँटा, ओस, रेशम।

2. **वाक्य ठीक करो–**

(क) क्रिसमस का दिन बड़ी होती है।

.....

(ख) त्योहार खुशियाँ लाती है।

.....

(ग) हमारे मित्र हमें उपहार देती है।

.....

(घ) शत्रु को भी गले लगानी चाहिए।

.....

3. **समझकर लिखो–**

(क) रात – .....रातें.....

(ख) बरसात – .....

(ग) छत – .....

(घ) पंखा – .....

(ङ) छत्ता – .....

(च) गत्ता – .....

चर्चा आधारित

कुछ करने के लिए

- अपने किसी ईसाई मित्र से क्रिसमस के बारे में और जानकारी प्राप्त करो।
- अपनी पसंद के त्योहार के विषय में कुछ लिखो।

.....

.....

.....

.....

.....

प्रश्न पत्र - I

(पाठ 1 से 6)

1. **सही उत्तर पर ✓ लगाओ–**

(क) बच्चे दूर रहना चाहते हैं–

(i) शहर से ( ) (ii) छल-कपट से ( )

(ख) इज़्ज़त मिलती है–

(i) बंदर को ( ) (ii) गाय को ( )

(ग) हिरन की बात से हाथी–

(i) सहमत था ( ) (ii) असहमत था ( )

(घ) डराने वाले से कभी नहीं होता–

(i) प्रेम ( ) (ii) घृणा ( )

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–**

(क) प्रेम किसे मिलता है?

.....

(ख) चूहा बातें करता-करता भाग क्यों गया?

.....

(ग) सुदामा से कृष्ण ने क्या पूछा?

.....

(घ) लोमड़ी ने मुर्गे के सामने क्या प्रस्ताव रखा?

.....

3. **किसने कहा?**

(क) "वहाँ क्या देख रहे हो?" .....

(ख) "तुम घबरा क्यों गई?" .....

(ग) "अच्छा मित्र, क्षमा करना मैं तो भागूँ।" .....

4. **बहुवचन लिखो–**

(क) मुर्गा ..... (ख) कुत्ता .....

(ग) खबर ..... (घ) किताब .....

5. **शब्दों के पीछे 'दान' शब्द जोड़कर लिखो–**

(क) पान ..... (ख) रोशन .....

(ग) पाय ..... (घ) फूल .....

6. **अर्थ लिखो–**

(क) लाभ ..... (ख) बेजोड़ .....

(ग) मुनाफा ..... (घ) तारीफ .....

7. कोई पठित कविता सुनाओ।

8. **इनके लिए एक-एक शब्द लिखो–**

(क) जो जिद करे .....

(ख) जो झगड़ा करे .....

(ग) जो कहना माने .....

(घ) जो सेवा करे .....

प्रश्न पत्र - II

(पाठ 7 से 14)

1. सही उत्तर पर ✓ लगाओ–

(क) कबूतर के पैर में बँधी थी–

(i) घंटी ( ) (ii) रस्सी ( )

(ख) पंछी चाहता है–

(i) आजाद रहना ( ) (ii) पिंजरे में रहना ( )

(ग) तारे को अपना जीवन लगता है–

(i) बेकार ( ) (ii) सुंदर ( )

(घ) चिड़िया दाने–

(i) चुगती है ( ) (ii) उगाती है ( )

2. किसने कहा–

(क) "मुझसे भरे पराँठे खाओ।" .....

(ख) "मेरी सब्जी बने करारी।" .....

(ग) "गोल भी हूँ और लंबा भी।" .....

(घ) "हर सब्जी के साथ निभूँ मैं।" .....

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

(क) सबसे पहले पिंकी ने कबूतर को कहाँ रखा था?

.....

(ख) तारे की क्या विशेषता लोगों को अच्छी लगती है?

.....

(ग) दाँत किससे साफ करने चाहिए?

.....

(घ) किसका रंग और अंग दोनों सुंदर है?

.....

4. निम्नलिखित वाक्यांशों से वाक्य बनाओ–

(क) मन मारकर .....

(ख) धमाचौकड़ी करना .....

5. बहुवचन लिखो–

(क) बकरी .....

(ग) अँगूठी .....

(ख) उँगली .....

(घ) तितली .....

6. सुमेल करो–

(क) लालन	(i) दुलार
(ख) हँसी	(ii) फिरना
(ग) प्यार	(iii) पालन
(घ) चलना	(iv) खुशी

7. अर्थ लिखो–

(क) अति .....

(ग) आभूषण .....

(ख) गद्‌गद .....

(घ) प्रकृति .....

8. कोई पठित कविता सुनाओ।